महानदी

"नराकास" दुर्ग–भिलाई की वार्षिक गृह पत्रिका

2016

कहानी विशेषांक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
भिलाई - दुर्ग (छ.ग.)

नराकास भिलाई दुर्ग देश के 'क' क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ नराकास पुरस्कार से सम्मानित

मानननीय राष्ट्रपति भारत सरकार श्री प्रणव मुखर्जी से 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' ग्रहण करते श्री एस.चन्द्रसेकरन, सी.ई.ओ., बी.एस.पी. एवं अध्यक्ष, नराकास, भिलाई–दुर्ग

महानदी

राजभाषा गृह पत्रिका–वर्ष 2016

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई–दुर्ग (छ.ग.)

संरक्षक

श्री एस. चन्द्रसेकरन

मुख्य कार्यपालक अधिकारी, भिलाई इस्पात संयंत्र एवं
अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
भिलाई-दुर्ग (छ.ग.)

मार्गदर्शक

श्री एल.टी. शेरपा

कार्यपालक निदेशक (कार्मिक व प्रशासन)
भिलाई इस्पात संयंत्र

संपादक

डॉ.बी.एम.तिवारी

वरि. प्रबंधक (राजभाषा) एवं सचिव,
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग (छ.ग.)

संपादक मंडल

श्री राजुल दत्ता

वरि. निवासी लेखा परीक्षाधिकारी
भिलाई

श्री डी.पी. देशमुख

वरि. प्रबंधक (जनसंपर्क, प्रशासन व राजभाषा)
'सेल' रिफ्रैक्ट्रीज़ यूनिट, भिलाई

श्री डी.पी. सिंह

प्रबंधक
नेशनल इंश्योरेंस कं.लि., भिलाई

श्री के.डी. खरे

प्रबंधक
राजभाषा विभाग, भिलाई इस्पात संयंत्र

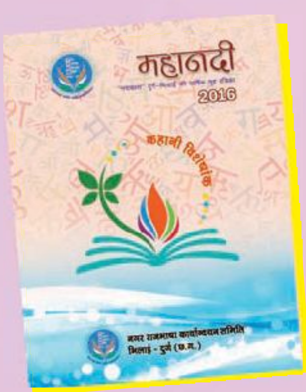

संपादक सहयोग

नराकास सचिवालय के अधिकारी एवं कार्मिक

इस अंक में		पृष्ठ संख्या
1.	परीक्षा, राजकमल प्रकाशन से साभार	1–2
2.	दो शब्द, श्री प्रवीण कुमार रघुवंशी	3–4
3.	भ्रष्टाचार से शिष्टाचार का समावेश ही कर्म कौशल है, श्री महानंद तिवारी	5
4.	स्वच्छ भारत की गाथा, श्री अवधेश कुमार	6
5.	माँ, श्री योगेन्द्र कुमार यादव	7
6.	एक थी स्वाती, श्री शीतल चन्द्र शर्मा	8
7.	मंत्री की सूझ-बूझ, श्री सनी कुर्रे	9
8.	उत्तराधिकारी, श्री प्रदीप कुमार विश्वकर्मा	10–11
9.	छोटा परिवार? परिवार, श्रीमती लक्ष्मी मिस्त्री	12
10.	अंजली को बचा लो, श्री ओम वीर करन	13–14
11.	तबादले की जंग, श्री ज्ञानेन्द कुमार साहू	15–16
12.	संघर्ष की विजय, श्रीमती अनुराधा धनांक	17
13.	अच्छे लोग बनाम अच्छे लोग, श्री गोपेन्द्र सिंह ठाकुर	18
14.	शब्दों की ताकत, श्रीमती भावना चांदवानी	19
15.	अब मेरी बारी, श्री सुनील कुमार साव	20–21
16.	निराश होने की जरूरत नहीं, श्री दयावीर मिश्र	22
17.	अमीर या गरीब, श्री असीम साहू	23
18.	भारत राष्ट्र में हिंदी राष्ट्रभाषा क्यों नहीं? विचारणीय प्रश्न, प्रो.नरेश मिश्र	24–25
19	आखिरी इच्छा, श्रीमती दीपशिखा प्रसाद	26
20.	लौह नगरी दल्ली राजहरा की एक झलक	27–28
21.	अदला-बदली, श्री प्रवीन राय भल्ला	29
22.	लघुकथा - मनोरंजन नही जीवन, श्री प्रशांत कुमार तिवारी	30
23.	"अंकुर", श्रीमती ए.पदमावती	31
24.	सबसे बड़ा मूर्ख, श्री जे.आर.साहू	32
25.	"सामान सौ बरस का पल की खबर नही", श्री पवन कुमार	33
26.	मोनू का हौसला, श्री सुरेन्द्र कुमार वैद्य	34

टिप्पणी

पत्रिका की रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। मौलिकता एवं अन्य विवादों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे।

संपर्क सूत्र

राजभाषा विभाग-313-ए, तीसरा तल, इस्पात भवन,
भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई नगर (छ.ग.)-490 001

नराकास छमाही बैठक एवं पुरस्कार समारोह 2015

एस. चन्द्रसेकरन
मुख्य कार्यपालक अधिकारी, भिलाई इस्पात संयंत्र
एवं अध्यक्ष नराकास, भिलाई-दुर्ग (छ.ग.)
S. CHANDRASEKARAN
CEO, Bhilai Steel Plant &
Chairman TOLIC, Bhilai-Durg (CG)

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग के सदस्य संस्थानों में कार्यरत कार्मिकों की रचनाओं के अनुपम संग्रह के रूप में ''महानदी'' का यह अंक 'कहानी विशेषांक' के रूप में प्रकाशित हो रहा है। ऐसी प्रतिभा संपन्न कार्मिक बिरादरी न केवल साहित्यिक क्षेत्र में अपितु कार्यालयीन कामकाज में भी अव्वल है। तभी तो हमारे नराकास को वर्ष 2015 के सर्वश्रेष्ठ नराकास के रूप में राष्ट्रपति महोदय द्वारा 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' से नवाजा गया है। वास्तव में यह पुरस्कार हमारे सामूहिक प्रयास का ही प्रतिफल है। इसलिए मैं अपने नराकास परिवार के सभी सदस्यों को इसके लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

आज का युग सूचना एवं प्रौद्योगिकी का है, जिसमें हिंदी के प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार हेतु तकनीकी विषयों को हिंदी में उपलब्ध कराना होगा। इस दिशा में नराकास का संस्थान भिलाई इस्पात संयंत्र अग्रणी की भूमिका निभा रहा है। संयंत्र में तकनीकी एवं चिकित्सा जैसे जटिल विषयों में भी हिंदी में पुस्तकें लिखी जा रही हैं, साथ ही साथ आनलाईन सिस्टम में भी हिंदी माध्यम अपनाया जा रहा है।

आज सूचना प्रौद्योगिकी विभाग भी इस बात को बखुबी मानता है कि देवनागरी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है। हिंदी टाईपराइटर के जन्मदाता आइजैक पीटमैन ने भी इस बात को स्वीकारा है, तभी तो यूनिकोड जैसी पद्धति के माध्यम से हमने हिंदी प्रयोग वृद्धि की दिशा में एक अनुपम उपहार पाया है। मेरा व्यक्तिगत मत है कि यूनिकोड में काम करना अति सरल एवं संविधानसम्मत है।

अंत में ''महानदी'' के इस विशेषाँक के प्रकाशन की समस्त शुभकामनाओं सहित ।

एस. चन्द्रसेकरन.
(एस. चन्द्रसेकरन)

नराकास भिलाई दुर्ग को प्राप्त राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम

भारत सरकार
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य)
निर्माण सदन 52-ए, अरेरा हिल्स
कमरा नं.206, भोपाल-462011
भोपाल (म.प्र.)
☎0755-2553149

सत्यमेव जयते

हरीश सिंह चौहान
अनुसंधान अधिकारी (कार्यान्वयन)

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति दुर्ग भिलाई, "महानदी" पत्रिका का वार्षिक अंक का प्रकाशन प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी करने जा रही है। विश्वास है कि आपके मार्गदर्शन व कुशल नेतृत्व में यह पत्रिका निरन्तर पुष्पित एवं पल्लवित होती रहेगी तथा इसकी सामग्री व सुगन्ध से दुर्ग भिलाई से जुड़े सभी क्षेत्रों के पाठक लाभान्वित होंगे। यह पत्रिका निश्चित रूप से सदस्य कार्यालयों के पारस्परिक संप्रेषण का सशक्त माध्यम सिद्ध होगी।

राजभाषा के रूप में हिंदी प्रयोग की पिछले 30-35 वर्षों की यात्रा पर विचार करें तो स्थिति सुखद संभावनाओं से भरी हुई है। आज हिंदी तकनीक के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। केन्द्रीय प्रतिष्ठानों विशेषकर उपक्रमों एवं राष्ट्रीयेंत बैंकों में परिचालन का कोई कार्य नहीं जो हिंदी में नहीं किया जा सकता बेशक यात्रा आसान नहीं रही। हिंदी ने विपरीत धारा में तैरकर अपने को स्थापित किया है।

व्यवसाय वृद्धि और अंतत: देश का विकास इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में हिंदी और भारतीय भाषाएं केन्द्र में रही हैं। इनके बिना सफलता की कल्पना नहीं की जा सकती।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भिलाई को राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य हेतु राष्ट्रपति महोदय द्वारा पुरस्कृत भी किया गया है इसके लिए समिति के अध्यक्ष एवं सदस्य सचिव, सह सचिव सहित इस कार्य से जुड़े आपके प्रतिष्ठान के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी बधाई के पात्र हैं। जब भी पुरस्कार सम्मान प्राप्त होता है तो और भी ज्यादा कार्य करने का दायित्व आ जाता है। इस दायित्व के कुशलतापूर्वक निर्वहन में आपकी समिति अग्रणी रहेगी ऐसी आशा है। भिलाई दुर्ग नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने सभी सदस्य कार्यालयों को एक सूत्र में पिरोने का अभूतपूर्व कार्य किया है इसके लिए हार्दिक बधाई। आपकी समिति हिंदी के कार्यक्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति करती रहे। भविष्य में भी राजभाषा हिंदी के प्रति इसी तरह का उत्साह बनाए रखें।

(हरीश सिंह चौहान)

प्रति,
श्री एस. चन्द्रसेकरन
मुख्य कार्यपालक अधिकारी एवं अध्यक्ष नराकास भिलाई दुर्ग

लाकपा टी. शेरपा
कार्यपालक निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन)
LAKPA T. SHERPA
Executive Director (Pers.& Admn.)

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

लौहनगरी भिलाई भारत का एक ऐसा नगर है, जहाँ सभी प्रदेश के लोग रहते हैं, किंतु उनके आपसी संवाद की भाषा हिंदी है। इसीलिए भिलाई को लघुभारत भी कहा जाता है। भाषा वही सक्षम है जो एक दूसरों को जोड़ने का काम करे। हिंदी इसमें सबसे आगे है। 'लघुता से प्रभुता मिले प्रभुता से प्रभु दूरी' इस सूक्ति का अनुगमन करते हुए हिंदी आज विश्व में बोली जाने वाली प्रथम भाषा है।

यही कारण है कि संविधान सभा ने 14 सितंबर,1949 को संविधान में देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया। भारतीय संविधान की रक्षा में सतत् प्रयासशील नराकास, भिलाई-दुर्ग इसके प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।

समिति द्वारा वार्षिक स्तर पर प्रकाशित "महानदी" का यह "कहानी विशेषाँक" सदस्य संस्थानों के कार्मिकों की रचनाओं का अनुपम संग्रह है।

आशा है, पत्रिका में प्रकाशित कहानियाँ अवश्य प्रेरणादायी होंगी।

पत्रिका प्रकाशन की शुभकामनाओं सहित,

(लाकपा टी. शेरपा)

नराकास के सदस्य संस्थानों द्वारा आयोजित नराकास स्तरीय प्रतियोगिताएँ

डॉ. बी.एम. तिवारी
वरि. प्रबंधक (राजभाषा) एवं सचिव,
नराकास, भिलाई-दुर्ग (छ.ग.)

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संपादकीय

पुरातनकाल से ही मानव समाज को बौद्धिक एवं व्यावहारिक स्तर पर कार्यपटु बनाने में मनीषियों ने कथाओं का आश्रय लिया है। तभी तो वैदिककाल में भी वेदों को आमजन तक पहुँचाने हेतु ब्राम्हण आरण्यक, उपनिषद आदि कथात्मक ग्रंथों की रचना की गई, जो कथा परंपरा की नींव है।

आज सुदूर गाँव के अनपढ़-गँवार से लेकर नगरीय उपनिवेश के संभ्रांत रहवासियों तक ज्ञान-विज्ञान एवं सांसारिक रीति-नीति की बातें कथाओं के माध्यम से ही कहीं जाती रहीं हैं।

संप्रति 21वीं शताब्दी के सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में भी दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों पर प्राचीन कथाओं को सजों-संवारकर परोसा जा रहा है, जिसे हर वर्ग के दर्शकगण चटकारें लेकर रसास्वादन कर रहे हैं।

इसी कड़ी में भिलाई नराकास परिवार भी सामाजिक सौहार्द्र एवं आपसी भाईचारे को कायम रखने की दिशा में समिति की गृह पत्रिका 'महानदी' को 'कहानी विशेषांक' के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा है। इसमें प्रकाशित आलेख संस्थानों में कार्यरत कार्मिकों के साहित्यिक संवेदनाओं एवं सामाजिक चेतनाओं को उजागर कर रहे हैं।

हमारे परिवार द्वारा पत्रिका का यह अंक प्रेक्षक सरीखे प्रबुद्ध पाठकों के समक्ष सादर समर्पित है। कृपाशीष की आकांक्षा में,

(डॉ. बी.एम. तिवारी)

परीक्षा

जब रियासत देवगढ़ के दीवान सरदार सुजानसिंह बूढ़े हुए तो परमात्मा की याद आई। जाकर महाराज से विनय की कि दीनबंधु! दास ने श्रीमान् की सेवा चालीस साल तक की, अब मेरी अवस्था भी ढल गई, राज–काज सँभालने की शक्ति नहीं रही। कहीं भूल–चूक हो जाए तो बुढ़ापे में दाग लगे। सारी जिंदगी की नेकनामी मिट्टी में मिल जाए।

राजा साहब अपने अनुभवशील नीतिकुशल दीवान का बड़ा आदर करते थे। बहुत समझाया, लेकिन जब दीवान साहब ने न माना, तो हारकर उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली पर शर्त यह लगा दी कि रियासत के लिए नया दीवान आप ही को खोजना पड़ेगा।

दूसरे दिन देश के प्रसिद्ध पत्रों में यह विज्ञापन निकला की देवगढ़ के लिए एक सुयोग्य दीवान की जरूरत है। जो सज्जन अपने को इस पद के योग्य समझें, वे वर्तमान सरकार सुजानसिंह की सेवा में उपस्थित हों। यह जरूरी नहीं है कि वे ग्रेजुएट हों, मगर हुष्ट–पुष्ट होना आवश्यक है, मन्दाग्नि के मरीज को यहाँ तक कष्ट उठाने की कोई जरूरत नहीं। एक महीने तक उम्मीदवारों के रहन–सहन, आचार–विचार की देखभाल की जाएगी। विद्या का कम, परन्तु कर्तव्य का अधिक विचार किया जाएगा। जो महाशय इस परीक्षा में खरे उतरेंगे, वे इस उच्च पद पर सुशोभित होंगे।

इस विज्ञापन ने सारे मुल्क में तहलका मचा दिया। ऐसा ऊँचा पद और किसी प्रकार की कैद नहीं केवल नसीब का खेल है। सैकड़ों आदमी अपना–अपना भाग्य परखने के लिए चल खड़े हुए। देवगढ़ में नए–नए और रंग–बिरंग के मनुष्य दिखाई देने लगे। प्रत्येक रेलगाड़ी से उम्मीद्वारों का एक मेला–सा उतरता। कोई पंजाब से चला आता था, कोई मद्रास से, कोई नए फैशन का प्रेमी, कोई पुरानी सादगी पर मिटा हुआ। पंडितों और मौलवियों को भी अपने–अपने भाग्य की परीक्षा करने का अवसर मिला। बेचारे सनद के नाम रोया करते थे, यहाँ उसकी कोई जरूरत नहीं थी। रंगीन एमामे, चोगे और नाना प्रकार के अंगरखे और कंटोप देवगढ़ में अपनी सज–धज दिखाने लगे। लेकिन सबसे विशेष संख्या ग्रेजुएटों की थी, क्योंकि सनद की कैद न होने पर भी सनद से परदा तो ढँका रहता है।

सरदार सुजानसिंह ने इन महानुभावों के आदर–सत्कार का बड़ा अच्छा प्रबंध कर दिया था। लोग अपने–अपने कमरों में बैठे हुए रोजेदार मुसलमानों की तरह महीने के दिन गिना करते थे। हर एक मनुष्य अपने जीवन को अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की कोशिश करता था। मिस्टर 'अ' नौ बजे दिन तक सोया करते थे, आजकल वे बगीचे में टहलते हुए ऊषा का दर्शन करते थे। मि. 'ब' को हुक्का पीने की लत थी, आजकल बहुत रात गए किवाड़ बंद करके अँधेरे में सिगार पीते थे। मि. 'द' 'स' और 'ज' से उनके घरों पर नौकरों के नाक में दम था, लेकिन ये सज्जन आजकल 'आप' और 'जनाब' के बगैर नौकरों से बातचीत नहीं करते थे। महाशय 'क' नास्तिक थे, हक्सले के उपासक, मगर आजकल उनकी धर्मनिष्ठा देखकर मंदिर के पुजारी को पदच्युत हो जाने की शंका लगी रहती थी! मि. 'ल' को किताब से घृणा थी, परंतु आजकल वे बड़े–बड़े ग्रंथ देखने–पढ़ने में डूबे रहते थे। जिससे बात कीजिए, वह नम्रता व सदाचार का देवता बना मालूम देता था। शर्मा जी घड़ी रात से ही वेद–मंत्र पढ़ने में लगते थे और मौलवी साहब को नमाज और तलावत के सिवा और कोई काम न था। लोग समझते थे कि एक महीने का झंझट है, किसी तरह काट लें, कहीं कार्य सिद्ध हो गया तो कौन पूछता है।

लेकिन मनुष्यों को वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा हुआ है।

एक दिन नए फैशनवालों को सूझी कि आपस में हॉकी का खेल हो जाए। यह प्रस्ताव हॉकी के मँजे हुए खिलाड़ियों ने पेश किया। यह भी तो आखिर एक विद्या है। इसे क्यों छिपा रखें। सम्भव है, कुछ हाथों की सफाई ही काम कर जाए। चलिए तय हो गया, फील्ड बन गई, खेल शुरू हो गया और गेंद किसी दफ्तर के अप्रेंटिस की तरह ठोकरे खाने लगा।

रियासत देवगढ़ में यह खेल बिलकुल निराली बात थी। पढ़े–लिखे भलेमानुस लोग शतरंज और ताश–जैसे गंभीर खेल खेलते थे। दौड़–कूद के खेल बच्चों के खेल समझे जाते थे।

खेल बड़े उत्साह से जारी था। धावे के लोग जब गेंद को लेकर तेजी से उड़ते तो ऐसा जान पड़ता था कि कोई लहर बढ़ती चली आती है। लेकिन दूसरी ओर से खिलाड़ी इस बढ़ती हुई लहर को इस तरह रोक लेते थे कि मानो लोहे की दीवार है।

संध्या तक यही धूमधाम रही। लोग पसीने से तर हो गए। खून की गर्मी आँख और चेहरे से झलक रही थी। हाँफते –हाँफते बेदम हो गए, लेकिन हार–जीत का निर्णय नहीं हो सका।

अँधेरा हो गया था। इस मैदान से जरा दूर हटकर

एक नाला था। उस पर कोई पुल न था। पथिकों को नाले में से चलकर आना पड़ता था। खेल अभी बंद ही हुआ था और खिलाड़ी लोग बैठे दम ले रहे थे कि एक किसान अनाज से भरी हुई गाड़ी लिए हुए उस नाले में आया। लेकिन कुछ तो नाले में कीचड़ था और कुछ उसकी चढ़ाई इतनी ऊँची थी कि गाड़ी ऊपर न चढ़ सकती थी। वह कभी बैलों को ललकारता, कभी पहियों को हाथ से ढकेलता लेकिन बोझ अधिक था और बैल कमजोर। गाड़ी ऊपर को न चढ़ती और चढ़ती भी तो कुछ दूर चढ़कर फिर खिसककर नीचे पहुँच जाती। किसान बार–बार जोर लगाता और बार–बार झुँझलाकर बैलों को मारता, लेकिन गाड़ी उभरने का नाम न लेती। बेचारा इधर–उधर निराश होकर ताकता, मगर वहाँ कोई सहायक नजर न आता। गाड़ी को अकेले छोड़कर कहीं जा भी नहीं सकता। बड़ी आपत्ति में फँसा हुआ था। इसी बीच में खिलाड़ी हाथों में डंडे लिए घूमते–घामते उधर से निकले। किसान ने उनकी तरफ सहमी हुई आँखों से देखा, परंतु किसी से मदद माँगने का साहस न हुआ। खिलाड़ियों ने भी उसको देखा मगर बंद आँखों से, जिनमें सहानुभूति न थी। उनमें स्वार्थ था, मद था, मगर उदारता और वात्सल्य का नाम भी न था।

लेकिन उसी समूह में एक ऐसा मनुष्य था जिसके हृदय में दया थी और साहस था। आज हॉकी खेलते हुए उसके पैरों में चोट लग गई थी। लँगड़ाता हुआ धीरे–धीरे चला आता था। अकस्मात उसकी निगाह गाड़ी पर पड़ी। टिठक गया। उसे किसान की सूरत देखते ही सब बातें ज्ञात हो गईं। डंडा एक किनारे रख दिया। कोट उतार डाला और किसान के पास जाकर बोला– मैं तुम्हारी गाड़ी निकाल दूँ।

किसान ने देखा एक गठे हुए बदन का लंबा आदमी सामने खड़ा है। झुककर बोला– हुजूर मैं आपसे कैसे कहूँ। युवक ने कहा– मालूम होता है, तुम यहाँ बड़ी देर से फँसे हो। अच्छा, तुम गाड़ी पर जाकर बैलों को साधो मैं पहियों को ढकेलता हूँ, अभी गाड़ी ऊपर चढ़ जाती है।

किसान गाड़ी पर जा बैठा। युवक ने पहिए को जोर लगाकर उकसाया। कीचड़ बहुत ज्यादा था। वह घुटने तक जमीन में गड़ गया, लेकिन हिम्मत न हारी। उसने फिर जोर किया, उधर किसान ने बैलों को ललकारा। बैलों को सहारा मिला, हिम्मत बँध गई, उन्होंने कंधे झुकाकर एक बार जोर किया तो गाड़ी नाले के ऊपर थी।

किसान युवक के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। बोला– महाराज, आपने आज मुझे उबार लिया, नहीं तो सारी रात मुझे यहाँ बैठना पड़ता।

युवक ने हँसकर कहा– अब मुझे कुछ इनाम देते हो।

किसान ने गंभीर भाव से कहा– नारायण चाहेंगे तो दीवानी आपको ही मिलेगी।

युवक ने किसान की तरफ गौर से देखा। उसके मन में एक संदेह हुआ, क्या यह सुजानसिंह तो नहीं है। आवाज मिलती है, चेहरा–मोहरा भी वही। किसान ने भी उसकी ओर तीव्र दृष्टि से देखा। शायद उसके दिल के संदेह को भाँप गया। मुस्कराकर बोला– गहरे पानी में पैठने से ही मोती मिलता है।

निदान महीना पूरा हुआ। चुनाव का दिन आ पहुँचा। उम्मीदवार लोग प्रातःकाल ही से अपनी किस्मतों का फैसला सुनने के लिए उत्सुक थे। दिन काटना पहाड़ हो गया। प्रत्येक के चेहरे पर आशा और निराशा के रंग आते थे। नहीं मालूम, आज किसके नसीब जागेंगे! न जाने किस पर लक्ष्मी की कृपादृष्टि होगी।

संध्या–समय राजा साहब का दरबार सजाया गया। शहर के रईस और धनाढ्य लोग, राज्य के कर्मचारी और दरबारी तथा दीवानी के उम्मीदवारों का समूह, रंग–बिरंगी सज–धज बनाए दरबार में आ बिराजे! उम्मीदवारों के कलेजे धड़क रहे थे।

जब सरदार सुजानसिंह ने खड़े होकर कहा– मेरे दीवानी के उम्मीदवार महाशयो! मैंने आप लोगों को जो कष्ट दिया है, उसके लिए मुझे क्षमा कीजिए। इस पद के लिए ऐसे पुरुष की आवश्यकता थी जिसके हृदय में दया हो और साथ–साथ आत्मबल। हृदय वह जो उदार हो, आत्मबल वह जो आपत्ति का वीरता के साथ सामना करे और इस रियासत के सौभाग्य से हमें ऐसा पुरुष मिल गया। ऐसे गुणवाले संसार में कम हैं और जो हैं, वे कीर्ति और मान के शिखर पर बैठे हुए हैं, उन तक हमारी पहुँच नहीं। मैं रियासत के पंडित जानकीनाथ–सा दीवान पाने की बधाई देता हूँ।

रियासत के कर्मचारियों और रईसों ने जानकीनाथ की तरफ देखा। उम्मीदवार दल की आँखे उधर उठीं, मगर उन आँखों में सत्कार था, इन आँखों में ईर्ष्या।

सरदार साहब ने फिर फरमाया, आप लोगों को यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति न होगी कि जो पुरुष स्वयं जख्मी होकर भी एक गरीब किसान की भरी हुई गाड़ी को दलदल से निकालकर नाले के ऊपर चढ़ा दे उसके हृदय में साहस, आत्मबल और उदारता का वास है। ऐसा आदमी गरीबों को कभी न सतावेगा। उसका संकल्प दृढ़ है उसके चित्त को स्थिर रखेगा। वह चाहे धोखा खा जाए। परंतु दया और धर्म से कभी न हटेगा।

प्रतिनिधि कहानियाँ – प्रेमचंद

राजकमल प्रकाशन से साभार

दो शब्द

प्रायः सार्वजनिक उत्सवों पर मंच से यही घोषणा सुनने को मिलती है कि अब माननीय महोदय/ महोदया द्वारा दो शब्द आशीवर्चन के रूप में कहे जाएंगे। जब भी यह आग्रह किसी से किया जाता है तो निश्चित रूप से दो शब्द कहकर कोई सज्जन वापस बैठ गए हों यह प्रायः देखने को नहीं मिलता। हम भारतीयों की अधिकांशतः आदत होती है कि मिले अवसर को मत गंवाओं, सब कुछ एक ही दिन में सामने वालों को परोस दें फिर मौका मिले न मिले।

दो शब्द जहां तक मैंने अनुभव किये हैं वह है चाहिए एवं होगा। अक्सर हम लोग बातों बातों में बच्चों से कह ही देते हैं कि आपको यह काम पूरा करना चाहिए अथवा यह काम पूरा करना होगा। यदि चाहिए और होगा जैसे शब्दों को हटा दिया जाए अर्थात इनके स्थान पर हमें यह काम करना ही है और हमने यह कार्य करके दिखा दिया।

शब्दों की ताकत आप सभी जानते ही हैं कुछ शब्द आपको सुकुन प्रदान करते हैं तो कुछ शब्द आपको भीतर तक हिला देते हैं। शब्दों से आपकी आंखों में खुशी के आंसू भी छलक सकते हैं और गमों के भी । आप स्वयं अपने शब्दों का आकलन करें तो पाएंगे कि जाने अनजाने हम कई दिलों को दर्द दे जाते हैं। मुँह से निकले शब्द और धनुष से छूटा हुआ तीर कभी वापस नहीं आते। आजकल एक नई धारणा सामने आई है कि शब्दों को वापस लेने के लिए दबाव डाला जाता है। मजेदार बात यह भी है कि कुछ लोगों द्वारा अपने कहे हुए शब्द वापस भी ले लिए जाते हैं लेकिन क्या यह संभव है जब आपके द्वारा कहे गए शब्द दूसरों पर बुरा प्रभाव छोड़ गए तो क्या ऐसी स्थिति में उन शब्दों को वापस कैसे लिया जा सकता है?

दो अच्छे शब्द माता–पिता,भाई–बहन,पति–पत्नी के संबंधों में नए आयाम स्थापित कर देते हैं। ठीक इसके विपरीत कटु शब्द रिश्तों की जमापूंजी को एक सेकण्ड में खत्म कर देते हैं। जैसे आशा के बाद निराशा, अपेक्षा के बाद उपेक्षा, सुख के बाद दुःख आदि कई युगल शब्द हैं। शब्द हमें नित्य नया जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। आशा शब्द हमें अपने लक्ष्यों को हासिल करने की प्रेरणा प्रदान उसी समय करता है जब हम यह आशा दूसरों से न करते हुए स्वयं ही पूर्ण प्रयासों से लक्ष्य के अंतिम छोर के लिए करें। यही जीवन की असली चुनौती भी है। चूंकि सफलता आसानी से मिलने वाली चीज नहीं है, धूप में चलकर किसी पेड़ की छांव के नीचे बैठकर ठंडा पानी पीने को मिल जाए तभी आपका संघर्ष सार्थक सिद्ध होता है। मीठे शब्दों में पुराने घावों को भरने की ताकत होती है। आप चाहें किसी भी धर्म के हों आपके द्वारा कम से कम शब्दों में की गई प्रार्थना, ईश्वर की अराधना के लिए आपकी आंखों के आंसू जो निःशब्द होते हैं, वही प्रार्थना सही अर्थों में कुदरत/ईश्वर को स्वीकार्य होती है।

छोटे बच्चों के तोतले शब्द आपके सारे दुःखों को एक पल में मिटा देते हैं, प्रकृति के कितने बड़े उपहार हैं ये तोतले शब्द और कुछ अनकहे शब्द बच्चों के द्वारा जो वाकई जिन्दगी में एक नई उमंग का संचार कर देते हैं। जैसे–जैसे हम इस दुनिया को समझने लगते हैं, बस गड़बड़ वहीं से शुरू हो जाती है। हम अधिक से अधिक केवल बोलना ही पसन्द करते हैं। गुस्से में शब्दों का चयन/सीमा का कोई ध्यान ही नहीं रहता है। प्रसिद्ध संत ने कहा भी है कि हम सुनना चाहते हैं इसलिए न सुनने का दुःख होता है, देखना चाहते हैं इसलिए न दिखने का दुःख होता है, बल चाहते हैं इसलिए निर्बलता का दुःख होता है, जवानी चाहते हैं इसलिए वृद्धावस्था का दुःख होता है। तात्पर्य यह है कि वस्तु के अभाव से दुःख नहीं होता, वस्तुतः उसकी चाहत से, उसके अभाव का अनुभव करने से दुःख होता है ।

इन शब्दों को देखिए आप किसी पर दया करेंगे तो ईश्वर सदैव आपको याद करेंगे, आप किसी का भला करेंगे तो ईश्वर आपको कभी न कभी कहीं न कही अवश्य इसका लाभ प्रदान करेंगे। यहां दया का ठीक उल्टा याद, और भला का ठीक उल्टा लाभ है। आपके द्वारा कहे गए शब्दों से यदि किसी को हँसी आती है तो समझ लीजिए आपने ईश्वर की अराधना कर ली और उस वक्त ईश्वर आपको याद कर रहे होते हैं, चूंकि कुदरत ने हँसने का वरदान केवल हम इंसानों को ही दिया है किसी और को नहीं। चार्ली चेप्लिन, जानी वॅाकर, मेहमूद जैसी बड़ी हस्तियां इस दुनिया को हँसाने में तभी कामयाब हुईं जब इन्होंने दुःखों को, अभावों को बहुत करीब से देखा तभी ये सभी संघर्ष की आग में तपकर लोगों को हँसाने के काबिल बने या यूं कहें कि कुदरत ने इन्हें अपना भरपूर आशीर्वाद दिया तभी इनके नाम ही काफी हैं हँसने के लिए। किसी ने सच ही कहा है कि

जीवन की गर्म रेत पर जब तुम चलोगो नंगे पांव,

पहुंचोगे अपने गांव,

वह गांव जहां बच्चे हैं, औरतें हैं, मर्द हैं,

सच यही है यहां सबके अपने–अपने दर्द हैं।

इस प्रकृति को कुछ तो मुस्कुराहट सहित वापस लौटाइए शब्दों का प्रयोग करते समय हमें स्वयं अपना आकलन करने का, खुद को पहचाने का यह अद्भूत स्वर्णिम अवसर प्रदान किया है इस कुदरत ने हमें, हां चलते–चलते दो शब्द और जो भी यह लेख पढ़ें उनसे विनम्र अनुरोध है कि एक पौधा अवश्य लगाएं और कम से कम पांच वर्ष तक उसे अपना अमूल्य समय भी दें।

शब्द संवारे बोलिए शब्द के हाथ न पांव ।
एक शब्द औषधि करे, एक शब्द करे घाव ।।

– कबीर

प्रवीण कुमार रघुवंशी
आशु लिपिक, क्षेत्रीय कार्यालय
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भोपाल

समय को बीते वर्षों से नहीं, अपितु अपने किए गए कार्यों अहसासों एवं उपलब्धियों से मापा जा सकता है

– पं. नेहरू

भ्रष्टाचार से शिष्टाचार का समावेश ही कर्म कौशल है

महानंद तिवारी
प्रधान आरक्षक,
केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, भिलाई

मैं किसी से आज तक कुछ नहीं लिया है और यदि लिया है तो अनासक्त भाव से, पहले मेरे मन में कामना भाव का समावेश ही सन्निहित नहीं था, यदि कोई श्रद्धावान देने का अभिलाषी था और अपनी स्वेच्छा से दिया तो उसे लेना नहीं कहा जायेगा, उसे ग्रहण करना कहा जायेगा। मैं उसकी भावना को मद्दे नजर रखते हुए दी गई श्रद्धावान गुप्त दान को स्वीकार करता रहा यदि मैं ऐसा न करता तो उसकी भावना पर कुठाराघात होता, इस कारण मैं शिष्टाचार का परिचय देते हुए श्रद्धावान के द्वारा दी गई सामग्री को ग्रहण करता रहा।

मैंने कब किसी से क्या ग्रहण किया। घर के ईशान कोण में पूजा स्थल का निर्माण किया जो श्रद्धावान अपनी श्रद्धा अर्पित करना चाहता था उसे ईश्वर के चरणों में समर्पित करने बाबत अनुरोध करता था श्रद्धा से गुप्तदान ईश्वर के चरणों में समर्पित करते और मैं ईश्वर का प्रसाद मानकर उसे ग्रहण करता रहा, गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है ''जो निष्काम भाव समस्त ईश्वर को समर्पित करता है जिसमें कोई मन में द्वेष लालच एवं अपनापन का भाव नहीं होता निसक्त भाव से ईश्वर को समर्पित कर देता है उसके द्वारा किये गये कार्य को पाप की संज्ञा नहीं दी जाती। इस प्रकार प्रसाद के रूप प्राप्त गुप्त दान को मैं ग्रहण करता रहा इसीलिए कहा गया है ''योगः कर्मयुकौशलम्'' जो श्रद्धावान द्वारा ईश्वर के चरणों में दिया गया उसे प्रसाद के रूप बिना किसी भाव से ग्रहण किया मेरे मन में किसी भी प्रकार की भावना का प्रादुर्भाव सन्निहित एवं प्रस्फुटित नहीं हुआ मैं बिना स्वार्थपरता के ही समस्त कार्यों को क्रियान्वित करता रहा जो शास्त्र सम्मत ''अत्र कुशलम् तत्राऽस्तु'' के भाव से सन्निहित है।

स्वामी अद्‌भुतानंद जी महाराज एक राजनीतिक शिविर में शिष्टाचार की ओर अग्रसित हुए वे राजनीति का चोला त्यागकर धर्म का चोला ग्रहण किये और अपनी वाणी के माध्यम से शिष्यों के ऊपर सुविचार की बौछार कर रहे थे यदि राजनीति में बुराईयों को खत्म करना है तो शिष्टाचार के माध्यम से ही उत्तम आयाम का प्रादुर्भाव किया जा सकता है अतः राजनीतिक जीवन में एक नई दिशा प्रशस्त कर शिष्टाचार का सामंजस्य प्रतिस्थापित किया जा सकता है। शिष्टाचार ही मानव के जीवन में नई ज्योति बिखेर सकता है।

स्वः चालीसा का व्याख्यान करते हुए स्वामी अद्‌भुतानंद जी महाराज राजनीतिक शिष्यों को असत्य से सत्य की ओर भावनाओं से सराबोर करने के उपरांत असत्यता और सत्यता की ओर अपनी प्रतिभा के चार चांद हेतु नया आयाम का रूप दे रहे थे।

''सत्यम ब्रुयात प्रियम ब्रुयात न ब्रुयात सत्यम अप्रियम'' सत्य बोलो, प्रिय बोलो असत्य मत बोलो, असत्य, असत्य है जो स्वयं सिद्ध है इस कारण असत्यता पर विजय नहीं पाया जा सकता है सत्य सर्वोपरि है जिस पर किसी भी प्रकार का पर्दा नहीं डाला जा सकता है।

यदि जल कुण्ड में जल को डाल दिया जाय और फिर जल कुण्ड से जल को निकाला जाय तो जल, जल ही है। इसी प्रकार असत्य, असत्य जो पूर्णतः सिद्ध है जो कि पूर्ण सत्य है। इस प्रकार भ्रष्टाचार में शिष्टाचार का समावेश है।

विचार का चिराग बुझ जाने से
आचरण अंधा हो जाता है
– विनोबा भावे

स्वच्छ भारत की गाथा

अवधेश कुमार
कनिष्ठ प्रबंधक, एफ एस एन एल, भिलाई

एक बार की बात है एक छोटे से कस्बे में एक साहूकार परिवार निवास करता था। साहूकार परिवार में घर का मुखिया, उनकी पत्नी, पुत्र व पुत्री के साथ उनके माता व पिता रहते थे। साहूकार परिवार न्यूज चैनल के माध्यम से देश में होने वाले तमाम घटनाक्रमों की जानकारी रखते थे। साहूकार परिवार की सक्रियता देखने लायक थी। परिवार का कोई भी सदस्य हो चाहे उनके वृद्ध माता–पिता हो अथवा उनके किशोरावस्था में पहुंचे उनके पाल्य सबके सब बहुत सक्रिय थे। चूंकि उन दिनों हमारे देश में स्वच्छता का बहुत प्रचार–प्रसार भारत सरकार के द्वारा किया जा रहा था। उसी कड़ी में यह परिवार भी अत्यन्त जागरूक व सतर्क था। नित ही यह परिवार अपने कस्बे में लोगों की स्वच्छता के विषय में बताते। परिवार के मुखिया अपने वृद्ध माता–पिता के साथ नित्य ही अपने घर व आसपास के जगह की साथ–सफाई करते। कहा भी गया है कि हम जितना ही अपने आसपास व घर की साफ–सफाई रखेंगे हमारा जीवन उतना ही निरोग होगा।

साहूकार परिवार के पड़ोस में कुछ और भी परिवार निवास करते थे। चूंकि ये सभी एक बहुमंजिला इमारत के फलैट्स में रहते थे तो इन सभी का आपस में एक अच्छा तालमेल था। साहूकार परिवार के निकट पड़ोसी एक तोमर परिवार था। तोमर परिवार में घर की मुखिया, उनकी पुत्र व पत्नी एवं उनका एक बालक था। तोमर परिवार थोड़ा गंदगी के साथ रहते थे। स्वच्छता पर उनका बिल्कुल भी ध्यान नहीं था। वह जहां तहां गंदगी फैलाते रहते थे। घर का कूड़ा भी वे सीढ़ियों पर आने जाने वाले रास्ते में फेंक देते थे, जिससे कि उस बहुमंजिला इमारत में निवासरत अन्य परिवारों को बहुत ही असुविधा होती थी। साहूकार परिवार के सदस्य तोमर परिवार के सदस्यों को हमेशा समझाते थे कि उन्हें साफ सफाई से रहना चाहिए। साफ–सफाई से रहने से उन्हें कोई बीमारी नहीं होगी और वातावरण भी स्वस्थ बना रहेगा। वे उन्हें भारत सरकार के 'स्वच्छ भारत मिशन' के विषय में भी बताते रहते थे कि कैसे हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी जी देश के प्रत्येक राज्य, शहर, कस्बो, गली, मुहल्लों को स्वच्छ बनाना चाह रहे हैं। 'स्वच्छ भारत मिशन' विषय की चर्चा न केवल हमारे देश भारत में हो रहा था अपितु सुदूर अन्य देशों में भी हो रहा था।

एक दिन तोमर परिवार की गृहणी ने रोज की भांति सीढ़ियों पर ढेर सारा कूड़ा करकट फेंक दिया। कूड़े करकट की ढेर में कुछ केले के छिलके भी थे। चूंकि यह सुबह की बेला थी हर दिन की भांति तोमर परिवार का बालक स्कूल जाने के लिए सीढ़ियों से उतर रहा था। अचानक से उस बालक का पैर केले के छिलके पर पड़ गया। चूंकि बालक तीव्र गति से सीढ़ियों से नीचे उतर रहा था तो वह उतनी ही गति से नीचे की तरफ धड़धड़ाते हुए गिर पड़ा । गिरने की वजह से उस बालक को गंभीर चोटे आई थी। उस बालक के सिर, नाक व कान से रक्त स्राव हो रहा था। बालक के चिखने चिल्लाने की आवाज से परिवारगण व उनके पड़ोसी घटनास्थल पर आ गये थे। चूंकि बालक के पिता सुबह के शिफ्ट के लिए घर से पहले ही जा चुके थे तो बालक को नजदीक के अस्पताल में पहुचाने का कार्य साहूकार परिवार के लोगों ने किया। चूंकि बालक के सिर पर रक्त स्राव निरंतर हो रहा था। डाक्टरों की टीम ने तत्काल उसकी मरहम पट्टी करके रक्त स्राव को बंद किया। इसके दौरान बालक अचेत हो चुका था और कुछ मूंवमेंट नहीं कर रहा था। डाक्टरों ने तत्काल उसका सीटी स्केन व एम आई आर किया। दोनों ही रिपोर्ट सामान्य आई। कुछ घंटों के अचेतावस्था के पश्चात बालक को होश आ गया तब कहीं जाकर लोगों के जान में जान आई। दो–तीन दिन अस्पताल में भर्ती होने के पश्चात बाद में उन्हें छुट्टी दे दी गई।

तोमर परिवार ने हाथ जोड़कर साहूकार परिवार को धन्यवाद दिया और उनसे जो वायदा किया कि अब से वे साफ सफाई का ध्यान रखेंगे। जहां तक हो सके अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखेंगे। तोमर परिवार को यह अफसोस भी था कि काश वे साहूकार परिवार की बातों को पहले ही गंभीरता से लिए होते तो शायद आज यह घटना नहीं घटती और उनका बालक स्वस्थ होता। चलिए कहा भी गया है कि देर आये दुरूस्त आये।

माँ

योगेन्द्र कुमार यादव
वरि.तकनीशियन, सेल रिफ्रैक्ट्रीज यूनिट, भिलाई

जब से पता चला मां गिर गई है माथे से खून भी निकला है सुनकर मन व्यथित हो गया है।

मॉ से फोन पर बात हो जाती तो मन को शांति मिल जाती।

झुर्रियाएं चेहरे, पोपले मुंह, दुबली पतली अस्सी वर्षीया मां अपने बच्चों की अपेक्षा आज भी स्वस्थ लगती है, क्योंकि वो आज भी अपना काम स्वयं करती है।

बड़ा बेटा विदेश में जाकर बस गया, दिमाग की किसी नस बंद हो जाने के कारण चलने फिरने में असमर्थ है।

बड़ी बेटी किडनी की बीमारी के कारण ज्यादा समय अस्पताल में ही रहती है।

छोटी बेटी दिल की मरीज है, मां उसी के पास रहती है, मां से सब फोन पर ही बाते कर लेते हैं।

मां इस बात से व्यथित थी मां कहती मुझे कमजोरी महसूस हो रही है, शरीर साथ नहीं देता, हमेशा दर्द बना रहता।

सब यह कहकर बात टाल देते अनुसूनी कर देते कि उम्र का तकाजा है।

मां इसी बात से खीजी रहती है कि खिन्न होकर सोचती मेरी कमजोरी किसी को क्यों दिखाई नहीं देती। मेरी संवेदना को क्यो नहीं समझते, क्या मेरी कमजोरी से इनकी बीमारी ज्यादा बड़ी है।

क्या मां इस संवेदना की हकदार नहीं है? किंतु समय व परिस्थितियां के आगे लाचार है।

उसे भी वो सब भावनाएं चाहिए जो इस उम्र के पड़ाव से गुजर रहे हो, मां अकेले रहकर भी खुश रहने का प्रयास करती लेकिन प्रकृति के आगे उम्र के पड़ाव पर व शारीरिक स्थिति व अवस्था में उसे हमेशा निराशा ही महसूस होती।

फोन से बात करने पर मां बहुत खुश थी। बहन से पता लगा मां के गिरने से चोट लगने के कारण सभी लोग उससे फोन पर बाते कर रहे हैं उसका ध्यान रख रहे हैं, चिंता कर रहे हैं यूं कहिये परिचर्चा कर रहे हैं, लाड़ कर रहे हैं। इस कारण मां बहुत प्रसन्न मुद्रा में दिखाई दे रही थी।

मां के गिरने पर माथे पर पट्टी बंधी थी लेकिन मां को ऐसा लग रहा था जैसे मानो सर पर मुकुट बंधा हो वह राजसिंहासन पर बैठकर हिलोरे ले रही हों। आनंद महसूस कर रही हो।

मां अपने चोट को भुलाकर प्रफुल्लित मुद्रा में आनंद ले रही हो।

मां के इस व्यवहार पर यह महसूस हो रहा था मां को भी अपना हक उनको लाड़ प्यार कोमल भावनाएं की हकदार है।

मां को मैंने इतना प्रसन्न कभी नहीं देखा इस हालातों में भी वे अपना दुख दर्द, अपनी भावनाएं जाहिर न कर खुशी जाहिर कर रही थी।

यह सब मां का बड़प्पन ही तो है।

निष्कर्ष :– हमें अपने रिश्तों को बनाये रखने के लिये अपने परिवार के बुजुर्गों का ध्यान रखना चाहिए।

आजकल के पीढ़ी के पास समय नहीं है अपने बुजुर्गों का कहना नहीं मानती अपने निर्णय स्वयं लेते हैं बिना किसी वरिष्ठ पारिवारिक सदस्यों के बिना कार्य करते हैं।

कई बार इसका परिणाम भी गलत होता है। बाद में पश्चाताप दुख लगता है।

इस कारण हमें अपने परिवार के बुजुर्गों को भी परिवार में एक सम्मान देना चाहिए।

उनके साथ समय निकाल कर समय व्यतीत करना चाहिए ताकि उनकी भावनाएं आहत न हो, उनको एक सम्मान प्राप्त हो। उनकी जिन्दगी उनको बोझ न लगे।

एक थी स्वाती

शीतल चन्द्र शर्मा, व्याख्याता, भि.इ.संयंत्र

घर में दीपावली का त्यौहर था। चारों ओर बड़ी चहल–पहल थी, साफ–सफाई, रंग–रोगन नए कपड़े, मिठाईयों की पसन्द, नापसन्द, कहीं छोट बच्चों की पटाखों की आवाजें, ऐसे एन वक्त पर घर में छः महीने पहले ब्याही गई बेटी स्वाती को आए देखकर मानों सारी खुशियों पर तुषारापात हो गया। स्वाती ने आते ही मां से लिपट कर कहा –

मां अब मैं उस घर में कभी नहीं जाऊंगी, कभी नहीं, भूल से भी नहीं। छः लड़कियों की मां दीना ने पूछा अरे बता तो सही क्या हुआ। अब तक तो सब ठीक था, अचानक ऐसा क्या हुआ, स्वाती ने रूंधे गले से कहा–क्या बताऊं मां, एक लड़का एक ही लड़का कहकर बेबी मौसी से मेरी शादी ऐसे जगह तय कर दी है, जहां रोज नए–नए सामान लाने की फरमाईस की जाती है। कभी नई वाहन, कभी वाशिंग मशीन, कभी एल.सी.डी. और मुझे कहा जाता है, अपने बाप से फोन करके ये चीजें लाओ नहीं तो इस घर में तुम्हारे लिये कोई जगह नहीं है।

मां रीना ने पूछा अंटी सब तो दिये हैं, कुछ डेढ़ लाख नकद भी उसके बाद भी ये क्या नई मुसीबत आ गई। स्वाति ने कहा इतना ही नहीं मां मेरे सांवले रंग के लिये भी मुझे मेरी सास और पति मुझे ताना देते रहते हैं, कहते हैं मुझसे ज्यादा सुंदर तो हमारे घर की काम वाली बाई है।पूरी घटना को सुनने के बाद मां का कलेजा भर आया, स्वाति के बाद चार और छोटी बहनों का बोझ उसके सिर में था। एक साल पहले बड़ी बेटी भारती का हाथ भी किसी तरह पीला किया था। अब नव विवाहिता बेटी भी घर बैठ जाएगी तो लोग क्या कहेगें। आस–पड़ोस, जात बिरादरी को क्या मुंह दिखायेगें इसी उधेड़बुन में बेचारी रात भर सो नहीं पाई।

दिन महीने व साल बीतते गए स्वाति आस–पास के किसी प्राइवेट स्कूल में नौकरी करने लगी पिता के लिए सभी संतान एक जैसे होते है, उसने पूरे मन से स्वाति का साथ दिया। बी.एड.करवाया कई जगह नौकरी का आवेदन भी करवाया लेकिन कोई बात नहीं बनी।

इसी बीच छोटी बहन दीप्ति की शादी की चर्चा होने लगी, किसी तरह से मां ने स्वाति की घर बैठने की बात को छिपा कर रखा, लेकिन विवाहित जवान बेटी के घर में बैठने की बात बरसाती उफान लिए नदी की तरह होती है, उसे कितना ही छिपाया जाये, अपने आस–पास के सभी कटाव, मेड़ को तोड़ती हुई रास्ता बना के पूरे वेग से बहती चली जाती है।

छोटी बहन दीप्ति की शादी हुई बड़े धूम–धाम से पिता ने लोन लेकर लड़के वालों की सारी मांगे पूरी की ये जानते हुए कि अभी चार जवान लड़कियो की जिम्मेदारी मेरी ही कंधे पर है। दीप्ति के घर से विदा होते ही घर में नए ढंग से कोहराम मच गया। छोटी बहन ज्याति ने कहा–जब तक स्वाति इस घर में है, हम दूसरी बहनों की शादी नहीं हो सकती। ये हम लोगों के रास्ते का कांटा है। स्वाति ने कहा–मैं अपने बाप के घर में हूं, किसी पर बोझ नही हूं।

ज्योति ने कहा– फिर भी अभी दीप्ति के शादी समय तुझे लेकर भी सब लोग पूछ रहे थे ताना कस रहे थे, कि इसके केस का जब तक निपटारा नहीं हो जाता, दूसरी बहनों की शादी नहीं हो सकती। विवाद कई दिनों तक चला मां ने समझाने की बहुत कोशिश की लेकिन छोटी बहन ज्योति बड़ी महत्वाकांक्षी थी, उसे स्वाति अपने रास्ते का सबसे बड़ा रोड़ा समझती थी। मां ने स्वाति को बहुत समझाया । धीरे–धीरे अन्य बहनें भी उसे ताना देंने लगी। मध्यमवर्गीय परिवार की सारी खांमियां उस घर में मौजूद थी।

क्या करूं, कहां जायें इसी पसोपेस में स्वाति को महीनों से नींद नहीं आई थी, एक दिन सीधे उसने उसी ससुराल वाली बस को पकड़ लिया जहां से उसे बेईज्जती करके निकाला गया था। मां को कुछ पता नहीं चला स्वाति कहां गई, पिता अपने ड्यूटी में गये थे, बहनें कुछ प्रसन्न, कुछ बहनें दुखी।

कुछेक दो महीने के बाद दैनिक भास्कर के स्थानीय पृष्ठ में एक खबर आयी, एक 25 से 30 के करीब उम्र की लड़की की लाश पास के गांव के नाले में तैरती हुई पाई गई। मां रीना ने पढ़कर अपने पति को दिखाया, पिता पढ़ते ही बेहोस हो गया, सेक्टर–9 में भर्ती कराया गया, लेकिन अभी भी आई.सी.यू. में ही है। मां का सेवा कर–करके बुरा हाल है ।

क्या स्वाति बच नहीं सकती थी, क्या घर व समाज उसे स्वीकार नहीं कर सकता था ? क्या उसकी दूसरी शादी नहीं हो सकती थी ? वो अपने पिता के घर ही नौकरी करके नहीं जी सकती थी ? ऐसे अनेक सवालों को लिए नारी सशक्ति करण के दौर में बेटी स्वाती इस दुनियां से बिदा हो गई, हमारे आधुनिक सभ्य समाज से जिसमें कि कहा जाता है–

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।"
यत्रास्तु न पूज्यन्ते तत्र सर्वाः अफला क्रियाः ।।

मंत्री की सूझ-बूझ

सनी कुर्रे
अभिकल्पन अभियंता, मेकॉन लि., भिलाई

किसी समय की बात है। एक राज्य में एक बहुत ही सदाचारी और विद्वान राजा हुआ करता था। उस राज्य की प्रजा बहुत ही खुशहाल एवं समृद्ध थी। उस राज्य एवं राजा की महानता दूर–दूर तक फैली हुई थी। वह राज्य खुशहाल के साथ बहुत शक्तिशाली भी था इसलिए आसपास निकट के पड़ोसी राजा उनसे ईर्ष्या किया करते थे। परंतु उन्हें हराना असंभव था। एक बार एक शत्रु राज्य के राजा ने उस राजा की मृत्यु करने का षडयंत्र रचा। इसके लिए उन्होंने अपने राज्य की एक अधिक चालाक और चतुर स्त्री को चुना। अपने राजा के आदेशानुसार स्त्री अपने लक्ष्य की ओर बढ़ गई।

एक दिन राजा अपने सैनिकों के साथ जंगल में शिकार हेतु गए। बीच जंगल में उन्होंने देखा कि एक असहाय स्त्री पर एक शेर आक्रमण करने वाला है। बिना विलम्ब राजा ने अपने बाणों से उस शेर को मृत्यु के घाट उतार दिया तथा उस असहाय स्त्री की रक्षा कर उसे अपने साथ महल ले आए। वह स्त्री दिखने में बहुत ही सुंदर थी इस प्रकार उस स्त्री की सुंदरता एवं सादगी से राजा मंत्रमुग्ध हो गये एवं उससे प्रेम करने लगे। एक दिन राज्य के गुप्तचर को उस स्त्री एवं पड़ोसी शत्रु राज्य के राजा के षडयंत्र के बारे में पता चला। उसने तुरंत मंत्री को इस बात की सूचना दी। मंत्री बिना विलम्ब राजा के कक्ष में गये और उन्हे सारी बात विस्तारपूर्वक बताई। राजा को आश्चर्य हुआ वह अपने मंत्री पर बहुत विश्वास किया करते थे परंतु उसे सुंदर स्त्री से भी प्रेम था। इस प्रकार रातभर विचार करने के बाद राजा ने अध्ययनकर एक रास्ता निकाला। उन्होंने मंत्री से कहा कि वह उस स्त्री से प्रेम करते है इसलिए उसे सजा नहीं दे सकते बल्कि उसके साथ प्रेमपूर्वक एवं आदरपूर्ण व्यवहार कर उसका मन परिवर्तित कर देंगे और वह सुधर जाएगी। किन्तु मंत्री उस शत्रु राजा को जानता था इसलिए उन्होंने राजा को पुनः समझाया फिर भी राजा नहीं माने और अगले दिन से वे उस स्त्री का और भी ख्याल करने लग गए। मंत्री समझदार थे। वह अपने राजा को जानते थे कि वो नहीं समझेंगे इसलिए मंत्री ने एक उपाय निकाला।

मंत्री का निवास राजा के महल के पास में ही था। राजा अक्सर उस मार्ग से विचरण के लिए जाया करते थे। मंत्री ने अपने राज्य के सपेरे से एक बिना विष वाला सर्प लाने को कहा। एक बार महाराजा उस मंत्री के निवास के सामने से गुजर रहे थे तभी उन्होंने देखा कि मंत्री महोदय पिंजड़े में बंद एक सर्प को दूध पीला रहे हैं। राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ उन्होंने मंत्री को समझाया कि वो ऐसा न करें क्योंकि सर्प बहुत ही विषैला होता है और वह उसकी जान ले सकता है। इस पर मंत्री ने उत्तर दिया कि उसे वन जीव से प्रेम है। तत्पश्चात महाराजा वहां से प्रस्थान कर गए। दूसरे दिन फिर वहां से भ्रमण करते हुए उन्होंने देखा कि मंत्री उस सर्प को पिंजरे से बाहर कर दूध पीला रहा है। राजा दौड़कर मंत्री के पास गए और उन्हें ऐसा करने से मना किया। मंत्री बोला कि उस सर्प से उसकी दोस्ती हो गई है इसलिए उसे वह सर्प कुछ नहीं करेगा। राजा के बार–बार समझाने के बाद भी मंत्री का सर्प प्रेम कम न हुआ।

एक दिन मंत्री के निवास से गुजरते हुए राजा ने देखा कि मंत्री सर्प को पिंजरे से बाहर निकालकर उसे अपने हाथ में लेकर प्रेमपूर्वक दूध पीला रहे हैं। राजा डर गया वह दौड़कर मंत्री के पास जाने लगा। तभी उस सर्प ने मंत्री को काट लिया। राजा कुछ कर पाते उससे पहले ही मंत्री सर्प काटने से धरती पर गिर गए। राजा आंसूभरे आंखों से मंत्री को गोद में लेकर रोने लगा और मरते हुए उस मंत्री को कहने लगा कि मैंने तुम्हे बार–बार समझाया था कि उस विषैले सर्प से दूर रहो क्योंकि वह प्रेम के पश्चात भी अपने आदत से विमुख नहीं हो सकता। ऐसा कहकर राजा अपने विश्वसनीय मंत्री खोकर बहुत दुखी हो गये।

अचानक मंत्री अपनी आंख खोलते है और उठ खड़ा होते है। उसे जीवित देख राजा बहुत प्रसन्न होते है। मंत्री हाथ जोड़कर अपने उस नाटकीय कृत के लिए महाराजा से क्षमा मांगते हुए कहते है "महाराज मैंने यह नाटक सिर्फ आपकी उस स्त्री से जान बचाने के लिए रचा था।" मंत्री के उपरोक्त वचन सुनते ही राजा को सब समझते देर न लगी। उन्होंने फौरन अपनी गलतियों का आभास हो गया। वह मंत्री की सूझबूझ से बहुत प्रभावित हुए एवं उनसे भी अपने कृत के लिए क्षमा मांगी।

अगले दिन राज्यसभा में राजा ने मंत्री को उसके राज्यप्रेम, सूझबूझ और कर्तव्यनिष्ठा के लिए रत्नों और आभूषणों से पुरस्कृत किया तथा अपने मंत्रीमंडल में विशेष दर्जा दिया। राजा ने उस शत्रु राज्य की स्त्री को इस षडयंत्र को दोषी करार देते हुए उसे मृत्युदंड करार देते हुए उसे मृत्युदंड दिया। इस प्रकार राजा फिर से एक खुशहाल जीवन अपने प्रजा के साथ व्यतीत करने लगे। सीख :– इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने विरोधी/दुश्मन से हमेशा सतर्क रहना चाहिए। क्योंकि वह एक सर्प की भांति अत्यंत प्रेमपूर्वक व्यवहार के बाद भी विश्वासघात कर सकता हैं।

उत्तराधिकारी

प्रदीप कुमार विश्वकर्मा,
तकनीकी सहायक (ध्वनि),
क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, दुर्ग इकाई

बचपन से सुनते हुए बड़े हुए हैं कि "उत्तम खेती, मध्यम बान,निष्कृष्ट चाकरी" लेकिन बढ़ती अर्थ व्यवसथा ने लोगों के मनमें इतनी असुरक्षा भर दी है, कि वे सरकारी नौकरी पाने अपना सब कुछ दांव पर लगाने को तैयार हैं। हों भी क्यों न सुरक्षा जो हो जीते जी मरने के बाद पत्नि या परिवार के नामिनी व सदस्यों को अनुशंसा की नौकरी की। इसी बात को कहती है, यह कहानी—

बिलासपुर जिले का एक गांव है, तारादेही एक मध्यमवर्गीय किसान सोम अपनी बांटे में मिली जमीन को बोकर अपने परिवार का भरण—पोषण कर रहा है। उसे चिंता है, तो अपने बड़े बेटे रमेश की, जो बचपन में ही पोलियो का शिकार होकर अपना आधा अंग कमजोर कर चुका है। पिता को चिंता है, कि उसका मंझला बंटा तो किसानी—मजदूरी करके अपना गुजर—बसर कर लेगा, परन्तु रमेश क्या कर पायेगा। वो ज्यादा पढ़ा भी नहीं है, उसे रोजगार में लगाने इतनी पूंजी नहीं हैं। कहते है ऊपर वाला सबका ध्यान रखता है, उसने रमेश को पोलियो से असक्त तो बना दिया, लेकिन उसके भविष्य का भी बंदोबस्त कर दिया। कल्याणकारी शासन के मापदण्डो में आखिरकार रमेश को केन्द्र सरकार के एक महकमें में चपरासी की नौकरी मिल ही गई। नौकरी क्या मिली पूरा परिवार और पूरे गांव ने खुशियां मनाई। रमेश की पोस्टिंग सरगुजा जिले में की गई। वो खशी—खुशी नौकरी ज्वांइन करने गया, साथ में गई मां। मां को अब लगने लगा कि रमेश की विकलांगता अभिशाप नहीं है।

पास ही गांव है, करकवेल जहां एक मध्यम वर्गीय किसान की बेटी सुमन गुड्डे—गुड़ियों को खेल—खेल कर अब जवान हो चली थी। पिता को अब लगने लगा कि बेटी का ब्याह कर दिया जाए। तभी तारादेही के एक मित्र ने बताया कि वहां का एक स्वजाति परिवार है, जिसका बेटा सरकारी नौकरी करता है। रिश्ते की बात आगे बढ़ी। सुमन की सहेली ने बताया कि तेरे लिए रिश्ता आया है। कच्ची उम्र ने उड़ान भरी कल्पना के सागर में ऐसी डूबी कि मेरे सपनों का राजकुमार घोड़े पर सवार होकर मुझे वरमाला डालकर ले जाएगा। कहते हैं, बच्चों खासकर लड़कियों को किशोरावस्था में बहुत समझदारी बरतनी होती है। उसकी मां इसमें मित्र—सखी बन जाये तो उसकी उंमगों को संतुलित रखा जा सकता है। खैर रमेश का परिवार स्वल्पाहार परोसते सुमन ने देखा कि उसका होने वाला पति विकलांग है, तो उसका मन उदास हो गया। वहीं रमेश की खुशी का ढिकाना न रहा। उसे सरकारी नौकरी भी मिली, और अब सुन्दर पत्नि भी मिलने वाली थी। शादी की तारीख तय हो गई, नियत तिथि को बारात आई फेरे हुये, और सुमन चली अपने पीहर के घर, उदासमन से। घर पहुंच कर रस्में पूरी की गई, सभी खुश सिवाय सुमन के, उसे सुंदर राजकुमार को देखा था।

बहु को उदास देख सभी ने सोचा अपने मायके की याद में दुखी है। धीरे—धीरे मेहमान बिदा हुये, सुमन भी पहली विदा होकर मायके लौटी। सखियों ने घेरा, चुहलवाजी की लेकिन सुमन उदास, उधर रमेश की भी छुट्टियां खत्म हो चली, वो अपने काम में वापस लौटा, अबकी बार उदास क्योंकि पत्नि ने उसे विकलांग देखकर सही बर्ताव नहीं किया। सोचा धीरे—धीरे सब ठीक हो जायेगा, फिर अपने काम में मन लगाने लगा, लेकिन पत्नि की याद में व्याकुल रहने लगा। तभी उसने एक सप्ताह की छुट्टी की अर्जी देकर पत्नि से मिलने का कार्यक्रम बनाया। वो अपने पिता मां से बिन बताए सीधे अपने ससुराल जा पहूंचा। वहां सुमन को देख उससे मिलने को तड़प उठा, सुमन ने देखा तो उसका पारा चढ़ गया, उससे रमेश को भला बुरा कह कर उसकी विकलांगता का मजाक उड़ाया। रमेश सह न सका, कहते हैं, कि पुरूष स्त्री की प्रताड़ना सह नहीं सकता व सीधे अपने काम पर आ गया। दिन—रात बैचेन हताश निराश, उसने अपना दुखड़ा किसी से बयान नहीं किया। एक रात अवसाद से घिरे रमेश ने आत्मघाती कदम उठा कर इस संसार को अलविदा कह दिया। पोस्टमार्टम के बाद शव घर लाया गया, गांव में मातम, सुमन भी आई और चिता जलते ही वापस मायके चली गई। सभी निराश बीमा कंपनी ने प्रारंभिक पड़ताल कर बीमा राशि रमेश के माता पिता को दे दी।

कुछ समय बाद डाक बाबू एक पत्र लाया जिसे गांव युवा मंच ने पढ़ कर बताया कि सुमन ने अदालत में अपील की है, कि मैं मृतक की विवाहिता हूं, अतः बीमा राशि उसे दी जाये। छः माह की सुनवाई के कानून ने फैसला दिया कि असली उत्तराधिकारी सुमन ही है। अब सरकार ने भी उसकी सारी देयताएं जैसे भविष्य निधि, पेंशन आदि सुमन को देना शुरू कर दिया। रमेश के मां बाप बेसहारा और ठगा महसूस करने लगे। आगे चलकर सुमन ने सरकार से

अपील की कि मुझे अनुकंपा नियुक्ति दी जाये।

युवा मंच ने रमेश के मां–बाप को बताया कि कारगिल युद्ध जब हुआ था तो युद्ध में शहीद हुई विधवाओं को सरकार के साथ उद्योग जगत और पूरे देश ने मदद का हाथ बढ़ाया था। कहते हैं जो मदद के लिये उठते हैं, वो दुआ में उठे हाथ से भी ज्यादा सार्थक होते हैं। राष्ट्र में संकट की घड़ी में सारा देश एक जुट हो गया था। विधवाओं को 40 एवं 50 लाख तक मदद मिलने लगी। कुछ युवतियां ने इतनी राशि लेकर अपने सास–ससुर का बेदखल करने की घटनाएं भी सामने आने लगी। तभी देश की सर्वोच्च न्यायालय ने व्यवस्था दी कि विधवाओं को मिलने वाले उत्तराधिकर में सास ससुर का बराबर का हक होगा।

सरकार के अफसरों ने पता लगाया कि सुमन अपने सास ससुर की देखभाल नहीं करती वो तो अपने मायके में ही रहती हैं। वकील ने सुमन को सलाह दी कि नोटरी से लिखवा लो मैं नौकरी मिलने के बाद अपने सास ससुर की देखभाल करूंगी। मामला अदालत में लगा दिया, सरकार की रिर्पोट को संज्ञान में लेकर आगे बढ़ा मामला अब तक विचाराधीन है। समाज और न्यायालय के सामने अब भी यह प्रश्न बना है, कि सुमन को मिलने वाली मुआवजा राशि या सुविधा और अनुकंपा का असली उत्तराधिकारी कौन है ???

जो व्यक्ति स्वयं सब कुछ
खुद करना चाहता हैं वह कभी
श्रेष्ठ लीडर नहीं हो सकता

– एन्ड्रयू कारनेगी

छोटा परिवार ? परिवार

श्रीमती लक्ष्मी मिस्त्री
उच्च श्रेणी सहायक, भारतीय जीवन बीमा निगम, भिलाई

बात लगभग 60–70 के दशक की है। उन दिनों चौराहों, अस्पतालों, फिल्मों की न्यूज रील आदि में परिवार नियोजन से संबंधित जो विज्ञापन देखने, सुनने और पढ़ने को मिलते थे, वे इस प्रकार के होते थे –

1 हम दो, हमारे दो

2 बेटा हो या बेटी – बच्चे दो ही अच्छे

3 छोटा परिवार सुखी परिवार

मंगला मामी और बसंत मामा का परिवार ऐसा ही सुखी परिवार था। दोनों नौकरी पेशा। अपना स्वयं का घर। बेटी स्वीटी और बेटा रोहित पढ़ कर नौकरी में आ गये थे। मामा पर परिवार की अन्य कोई जवाबदारी न थी, क्योंकि मां पिता जी अन्य भाइयों के साथ रहते थे। चारों का मिलनसार और हंसमुख स्वभाव था।

एक दिन छोटे भाई का फोन आया। बसंत मामा एवं मामी ने जहर खा लिया था। पेपर में पढ़कर इसकी जानकारी पता चली थी। बाद में मालूम हुआ कि स्वीटी ने मामी के आफिस के चपरासी के बेटे से शादी कर ली थी। मामा–मामी ने बेटी की ससुराल जाकर बेटी को बहुत मनाया, घर वापस आने को कहा, बेटी के पैर भी पड़े। परंतु वह वापस आने को तैयार नहीं हुई थी।

इसी निराशा में दोनों ने यह कदम उठाया था। काश । दोनों ने धीरज से काम लिया होता। समय तो हर मर्ज की दवा है।

मामा–मामी को अस्पताल में भर्ती कराया गया। मामी को तो 1–2 दिन रखकर छोड़ दिया गया था। परंतु मामा की हालत बिगड़ती जा रही थी। उन्हें मुम्बई ले जाया गया। बहुत प्रयास के बाद भी उन्हें बचाया न जा सका। उस समय मुम्बई में भी मौसम का बुरा हाल था। चारों ओर पानी ही पानी था।

सड़क, रेल और हवाई यातायात सभी प्रभावित थे। शव वापस जबलपुर लाना संभव न था। भरापूरा परिवार होने के बावजूद भी उन्हें कंधा देने वाला नसीब न हो सका। वहीं उनका अंतिम संस्कार कर वापस आना पड़ा।

मामी ने हिम्मत से काम लिया। बेटे की शादी उन्होंने उसी के साथ काम करने वाली एक लड़की से करा दी। बाकी जीवन कैसा बीत रहा था उसकी विशेष जानकारी तो नहीं थी, परंतु बरसात आते ही पुरानी घटना दिमाग में घूमती रहती।

अगली बरसात के समय जुलाई में छोटे भाई का फोन आया कि मंगला मामी ने धुंआधार में कूदकर आत्महत्या कर ली है।

2 दिन पहले ही बेटा बहू शाम को खरीददारी कर वापस आये न जाने मां बेटे में क्या बहस हुई थी। रोहित ने मामी को (मां) सड़क पर घसीट घसीटकर पीटा था।

अगले दिन मामी रोज की तरह ऑफिस जाने को निकली थी। जब शाम को समय पर घर वापस न पहुंची तब खोजबीन की गई। सुबह के पेपर से यह जानकारी मिली कि एक महिला ने धुंआधार में छलांग लगा दी थी।

पास खड़ी स्कूटी और उससे निकले सामान से स्पष्ट हुआ कि वह मंगला मामी ही थी।

चार–पांच दिन बाद कई किलोमीटर दूर गोताखोरों को जो कंकाल मिला, वह मामी का ही था। दोनों घटनाएं अप्रत्याशि और चौंकाने वाली थी।

बार–बार कई सवाल मन में हलचल मचा रहे थे। काश मामा–मामी ने स्वीटी के निर्णय को गंभीरता ने न लिया होता।

1 बेटी से इतनी अंतरंगता बनाते कि वह अपने विवाह के निर्णय को मां–पिता जी के साथ साझा कर पाती। यदि नहीं तो ३३

2 उसे अपनी जिंदगी अपने ढंग से जीने का पूरा अधिकार तो देते। बेटी भी तो पढ़ीलिखी अपने पैरों पर खड़ी थी।

3 अपने आत्म सम्मान का विषय न बनाते उससे रिश्ता भी तो तोड़ सकते थे ह

काश मामी ने घरेलू हिंसा को अपने ऊपर हावी न होने दिया होता ह

4 उनका अपना घर था। यदि बेटे बहु के साथ रहना कठिन था तो उन्हें शांति से अलग रहने देती।

आत्महत्या जैसी घटना को अंजाम देना बड़ा दुखदायी कदम था। वे स्वयं भी तो अपने पैरों पर खड़ी थीं।

मां बाप अपनी ओर से बच्चों को वह सब देने का प्रयास करते हैं जो उन्हें नहीं मिला। पर बच्चे उनकी भावनाओं को समझे बिना अपनी मनमानी करें। तब ऐसी अनहोनी दिल दहला देने वाली घटना बन कर सामने आ जाती है।

यदि यह ''छोटा परिवार सुखी परिवार'' होता तो कितना अच्छा होता।

अंजली को बचा लो

ओम वीर करन
प्रचालक
भिलाई इस्पात संयंत्र

आग से जलती हुई अंजली चिल्ला रही,प्लीज उसे बचा लो, उसे मरने मत दो, एक और अंजली की मेरी जैसी दुर्गती नहीं होनी चाहिये, किसी और अंजली को आत्महत्या नहीं करनी चाहिये,प्लीज उसे बचा लो ..... प्लीज उसे बचा लो जैसे उसकी चीखें बढ़ती जा रहीं थी, उसके मैं में लगी आग बढ़ती जा रहीं थी, उसकी कान उसकी आंखें उसका पूरा जिस्म जल–जल कर गल–गल कर गिरने लगा, उसके शरीर की जलन बढ़ते– बढ़ते मेरे दिल तक पहुंचने लगी, मेरा दिल भी जलने लगा, जलन इतनी बढ़ गई कि मेरे दिल की धड़कनें तेजी से भागने लगी, मैं नींद से हड़बड़ा कर उठा, उसकी चीखों की जलन मैं अब भी महसूस कर रहा था ।

मेरा ध्यान फिर कालेज क स्पोर्टस डे (खेलकूद दिवस) की ओर चला गया, फिर अंजली याद आई, अंजली का चेहरा गोल था, रंग गोरा था, ऊंचाई मध्यम थी, लेकिन कुछ तो था, जो मुझे उसकी तरफ खींच रहा था, क्या था पता नहीं........... उसकी आंखों की मासूमियत या उसके चेहरे का भोलापन......... या कुछ और........... पता नहीं .... मेरे साथ मेरे कालेज का दोस्त समीर भी था, सामान्य चेहरा, सामान्य हाईट, लेकिन वो लड़कियों से बात करने में एक्सपर्ट था, और मैं संकोची और शर्मिला .... उसने कहा “क्या आपका नाम संगीता है, क्या है कि सर ने कहा है, कि संगीता को बुलाके लाओ, और मैं संगीता को पहचानता नहीं हूं । उसने कहा जी मेरा नाम संगीता नहीं है, बिना भूमिका बांधे समीर ने कहा तो फिर आपको डॅाक्टर होना चाहिये, क्योंकि जब भी मैं कालेज आता–जाता हूं, मेरा ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है, चिड़चिड़ा हो जाता हूं, लेकिन आपको देखकर ब्लड प्रेशर नार्मल हो गया है, तो फिर हुई ना आप डॅाक्टर ?

इतना सुनते ही अंजली खिल–खिलाकर हंस दी और हंसते हुये बोली “ना बाबा ना मैं कोई डॅाक्टर नहीं हूं मेरा नाम अंजली है”,बात शुरू हो जाये तो बात बढ़ने में कहां वक्त लगता है, वो दोनों काफी देर तक बातें करते रहे, और मैं गुमसुम सा नकली हंसी देता हुआ खड़ा रहा । फिर उनमें मुलाकातें होने लगी । शुरू–शुरू में भी समीर के साथ जाता था, फिर समीर अकेले ही उससे मिने लगा। । फिर वही हुआ जो आज–कल के रिश्तों में हो रहा है, या अक्सर होता है, समीर उसकी जिन्दगी बनता जा रहा है, वो उसके प्यार में डूबती जा रही थी, और अंजली समीर के लिए देह बनती जा रही थी, जो उसकी देह की गर्मी बुझाने का जरिया था । अंजली समीर के लिये बड़ी तेजी से लड़की से देह में तब्दील हो रही थी ।

अंजली के परिवार में उसके माता–पिता के अलावा एक बड़ा भाई और एक छोटी बहन थी । जैसा कि मध्यम वर्ग परिवार में होता है, कि लड़का अगर बड़ा भी होता है, तो पहले लड़की की शादी की जाती है, अंजली के पिता उसके लिये लड़का खोजने लगे, एक पसन्द भी आ गया था । अंजली बहुत दबाव में आ गयी थी, वो समीर से मिलने गई, और समीर से कहा प्लीज समीर तुम कह दो कि हम शादी करेगें, सैटल होने के बाद मैं तुम्हारा पांच साल, दस साल, जिंदगीभर इंतजार करूंगी, बस एक बार कह दो कि ...... तुम मुझसे शादी करोगे ....

समीर उसे गीता ज्ञान देने लगा वक्त किस्मत और ना जाने क्या–क्या कहने लगा, जिसक कुछ मतलब इतना था, कि अंजली उसकी नजर में देह बनकर रह गई है, जिसके साथ अपनी देह की गर्मी तो मिटाई जा सकती है, लेनि उसके साथ पूरी जिन्दगी नहीं बिताई जा सकती है । समीर की नजरों में अंजली सिर्फ एक देह थी, और अंजली की नजरों में समीर पूरी जिन्दगी था, और जिन्दगी उसे दगा दे गई थी । समीर की जिंदगी में बहुत सी लड़कियां आई थी, अंजली उनमें से उसके लिए एक थी, लेकिन अंजली के लिए समीर तो .... ?

अंजली सीधा घर आई दरवाजा बंद किया, चुन्नी को पंखें में लपेटा और सीधा झूल गई, वो तो घ|र में उसके भाई–बहन थे, जिन्होंने उसे बचाया, फिर सारी कहानी सामने आई, बजाये समीर को कुछ करने के अंजली को मारा पीटा गया, सांत्वना देने की जगह लोकलाज के भय से अंजली को जल्दी को जल्दी शादी करने के लिये दबाव बनाया गया, “ कमाल है ये लाकलाज का भय अंजलियों के लिए होता है, समीरों के लिए नहीं”, अंजली को मारा–पीटा जाता रहा, परिवार का हर सदस्य दुनिया जहान का गुस्सा उसपे उतारता रहा । काश कोई अंजली को समझा पाता काश कोई उसकी व्यथा समझ पाता तो अंजली आज जिन्दा होती ।

एक दिन अखबार में लिखा था, कि अंजली गौतम ने घर में आग लगाकर आत्महत्या कर ली है, कारण दिया गया था, कि उसका एकजाम में पेपर खराब गया । मामला

पूरी तरह दबा दिया गया, अंजली की हत्या की गई थी, समीर द्वारा लेकिन अंजली के परिवार को लोकलाज का भय था, इसमें पोस्टमार्टम की रिपोर्ट में आत्महत्या की पुष्टि हुई । आत्महत्या के कारण पोस्टमार्टम में छुप जाते हैं, जैसे समीर छुप गया था । अंजली का परिवार छुप गया था, लोकलाज छुप गई थी ।

सुना है मैं अपने दोस्तों से समीर घुमने–फिरनें वाला जाब कर रहा है, और उसनें एक लड़की भी अपने प्यार के जाल में फंसा रखी है, वो भी अंजली की तरह हो गई है, उसका अंजाम भी अंजली की तरह हो सकता है, मुझे ना समीर का पता मालूम है, ना उस लड़की का नाम व पता हो सकता दोनों आपके शहर में हो, प्लीज एक और अंजली को बचा लिजिये वो आपकी बहन,बेटी या सहेली हो सकती है । कहीं वो आप तो नहीं ....?

अपने मिशन के प्रति अटूट विश्वास से
परिपूर्ण एक शरीरधारी व्यक्ति
इतिहास की राह बदल सकता है

– महात्मा गाँधी

तबादले की जंग

–ज्ञानेन्द्र कुमार साहू
सहायक महाप्रबंधक(ई.डी.डी.)
भिलाई इस्पात संयंत्र

सन 2003 के अक्तूबर माह की बात है। पहाड़गँज लौह कारखाने में सीनियर मैनेजर से सहायक महाप्रबंधक पद में प्रमोशन के आदेश आने वाले थे। सर्वत्र बेचौनी का माहौल था।

धमन भट्टी में कार्यरत मनोज भी अपनी पदोन्नति की राह देख रहा था। उसकी नजर में वह विभाग का चहेता था। विभाग प्रमुख मिश्रा साहब यदाकदा बोल उठते थे, "जितना आनन्द उठाना है अभी उठा लो, आगे क्या होगा कोई नहीं जानता। जो खुशी है इसी पल में है, भूत बीत चुका है और भविष्य के गर्त में कोई झांक नहीं सकता"। उनकी ये बातें सुनकर अनिष्ट की आशंका से मनोज का मन कांप उठता था।

9 अक्तूबर शनिवार का दिन था। सुबह से प्रमोशन के आदेश निकलने की चर्चा जोरों पर थी। सायं 5 बजे महाप्रबंधक महोदय के कार्यालय से बुलावा आया। मनोज समझ चुका था कि संभवतः पदोन्नति सूची में उसका भी नाम है।

महाप्रबंधक महोदय के कक्ष में प्रमोशन लेने वालों के अलावा अधिकारी एसोसियेशन के तत्कालिन अध्यक्ष भी उपस्थित थे। महाप्रबंधक महोदय ने सभी लिफाफों पर हस्ताक्षर कर सभी पदोन्नति आदेशों को "अधिकारी एसोसियेशन" के अध्यक्ष की ओर बढ़ा दिया। वर्तमान पद पर सात वर्ष बिता लेने के कारण मनोज पदोन्नति पाने वालों में सबसे वरिष्ठ था। पदोन्नति आदेश वरिष्ठता क्रम से विपरीत बांटे जा रहे थे। मनोज को पदोन्नति आदेश देते समय अधिकारी एसोसियेशन के अध्यक्ष मूर्छित प्रसाद की मुस्कान कुछ कुटिल हो चली थी। उन्होंने मनोज से मुखातिब होते हुये कहा "मनोज जी आपका प्रमोशन तो हो गया है परन्तु आपका स्थानान्तरण माईंस में कर दिया गया है।'' माईंस पहाड़गँज लौह कारखाने का ही एक यूनिट था। मनोज को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उसे लग रहा था कि किसी ने हजारों टन का हथौडा उसके सर पर दे मारा हो। उसने महसूस किया कि पिछले "अधिकारी एसोसियेशन" के चुनाव में वर्तमान अध्यक्ष के विरूद्ध चुनाव प्रचार करना ही शायद स्थानान्तरण की वजह हो सकती है। कई दिन इसी उहापोह में गुजर गये कि प्रमोशन लें या नहीं। प्रमोशन लेने का अर्थ था कि अपनी बसी–बसाई गृहस्थी छोड़ कर अनिश्चितकाल के लिये अन्यत्र चले जाना और प्रमोशन न लेने का अर्थ था कि आने वाले दो वर्षों के लिये वर्तमान पद पर बने रहना।

"माईंस" और "पहाड़गँज लौह कारखाने" के मध्य की दूरी अमूमन 300 कि.मी. की होगी। इन दोनों के मध्य एक गांव पड़ता था "रेंगाकठेरा"। वह मनोज का पैत्रिक गांव था जहां उसके उम्रदराज माता–पिता रहते थे। आनन फानन में और एक दो दिन किसी तरह बीते। नियम के अनुसार मनोज को पदोन्नति आदेश मिलने के दिन से तीस दिनों के अन्दर नये विभाग को ज्वाईन कर लेना था।

एक महीना होने को आया था। मनोज ने विभाग प्रमुख श्री मिश्रा साहब से अनुरोध किया कि वे उनका स्थानान्तरण सह कार्यमुक्ति आदेश बनवा दें। दिनांक 7 नवंबर को मनोज ने माईंस के महाप्रबंधक के समक्ष उपस्थित होकर अपना पदभार ग्रहण कर लिया। वह पुनः अतीत की यादों से घिर गया। सालों पहले, शादी के तुरंत बाद जब वह खदान के टाऊनशीप में अपने साले साहब के घर घूमने आया था तब उसे माईंस का सफर काफी खुशनुमा लगा था। खूबसूरत सपाट बलखाती हुई सड़कें, सड़क के दोनों और धान की लहलहाती फसलें। कहीं कहीं पर बड़े बड़े साल के पेड़ों से भरा जंगल, जंगली फूलों से आती मदमाती खूशबू ये सब दृश्य मिलकर सफर को काफी खुशनुमा बना दिया करते थे। पर अब वो बात नहीं रहीय क्योंकि नक्सलियों का आतंक अब सिर चढ़कर बोलने लगा है। कभी सड़क खोदकर वाहनों की आवाजाही अवरुद्ध करना तो कभी सड़क बनाने वाले उपकरणों को आग के हवाले कर देना। घात लगाकर सुरक्षा बलों पर हमला, तो कभी बाजार में घूम रहे निहत्थे पुलिस कर्मी का सिर कलम कर देना। गांव की अदालत लगाकर पुलिस के मुखबिर होने के शक में निर्दोष ग्रामीणों को सरे आम गोली मार देना। कुल मिलाकर नक्सलियों ने इस पावन धरती को लहूलुहान कर रखा है।

उधर मरझरा–खदान में पहाड़गंज लौह कारखाने जैसा माहौल नहीं था। व्यवस्थित कार्य पद्धति तो थी परन्तु सुविधाओं और मेन–पावर का टोटा था। मनोज को खदान की एक इकाई का इंचार्ज बना दिया गया था। मनोज के कार्यक्षेत्र में माईंस के ग्यारह खनन यंत्र, 15 डम्पर, दो वाहन जो सड़कों पर पानी स्प्रे करते थे, तीन डोजर, एक रोड बनाने वाली मशीन एवं पाँच ड्रिलींग मशीन के रख–रखाव की जिम्मेदारी थी।

मनोज अब खदान–टाऊनशीप के अधिकारी हास्टेल में रहने लगा था। खदान में तकरीबन हर उपमहाप्रबंधक के पास कंपनी के द्वारा दी गयी अच्छी खासी जीप थी। आपरेशन के इंचार्ज एवं माईंस मैनेजर के पास अपनी–अपनी एक एक चमचमाती जीप थी। परन्तु मनोज

के हक में एक खटारा जीप आयी थी जो सभी ओर से खुली थी। उसी में मेंटेनेंस का सारा स्टाफ सफर करता था। मेंटेनेंस के उपकरण उसी से ढोये जाते थे। एक बार के सफर मे ही सशरीर धूल धूसरित हो जाना लगभग तय था।

बारिश का समय लगभग खत्म हो चुका था। क्वारी में स्वयं का वाहन ले जाने की मनाही होती है। डम्पर जाने के लिये चौड़ी चौड़ी कच्ची सड़कें होती हैं। पहियों पर क्राउलर माउंटेड भारी वाहन चलने के कारण वहां सड़कों का डामरीकरण कार्यसंगत नहीं है। मनोज ने अपने जीप के ड्राईवर को बुलाकर क्वारी की तरफ प्रस्थान किया। क्वारी की बनावट लगभग गहरे दिये के समान होती है जिसके आंतरिक भाग में अयस्क मिश्रित मिट्टी की बहुत सारी गोल सीढ़ियांनुमा बनावट होती हैं। सीढ़ियों के उर्ध्वाधर भाग को "फेस" एवं क्षैतिज भाग को "बेन्च" कहते हैं। बेन्च पर डम्पर जैसी भारी वाहने दौड़ती हैं एवं फेस को काटकर लौह अयस्क की सप्लाई की जाती है। जियोलाजिस्टों के अनुसार क्वारी की गहराई वहाँ के वाटर टेबल से नीचे जाने के कारण वर्षा के पानी का बहुतायत में जमाव क्वारी के अन्दर हो जाता था एवं प्रतिवर्ष वह गहरी बावली का शक्ल ले लेती थी। जमा पानी के गहराई का अन्दाजा लगाना मुश्किल था और वहां पर दो अति उच्च क्षमता वाले मोटर पंप लगे हुए थे जो लगातार क्वारी के पानी को 45 मीटर ऊंचे बन्ड के उस पार एक नाले में फेंक रहे थे। लोगों से पुछने पर यह जानकारी मिली की उस जमा पानी को खाली करने में चार महीनों का समय लग जाता है। इन चार महीनों में अयस्क के उत्पादन में भारी कमी हो जाया करती है। उस पर आलम यह कि खदान समूह के सबसे उच्च क्वालिटी का लौह अयस्क इसी क्वारी में ही है।

आज दोपहर का खाना खा लेने के पश्चात मनोज एक गहन चिन्तन में डूब गया कि पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण का उपयोग करते हुये क्या कोई तरीका ऐसा नहीं हो सकता कि क्वारी का पानी बिना पम्पिंग किये हुये स्वयमेव बाहर निकल जाये, जिससे उत्पादन को ज्यादा हानि न हो साथ ही बिजली की बचत के कारण करोड़ों में रूपयों की बचत हो।

दूसने दिन ड्यूटी पर पहुंचते ही मनोज सीधे ज्योलाजिकल सेक्शन गया। वहाँ पर ज्योलाजिकल ड्राईंग में वह बंड के बाहर ऐसा कन्टूर ढुंढने लगा जिसका लेवल क्वारी के वाटर टेबल से नीचे हो और वह भाग किसी नेचुरल नाले से जुड़ा हो। काफी गहराई से मुआयना करने पर उसे ऐसा भाग दिखाई देने लगा। पेन्सिल से चिन्हीत करने के बाद मनोज यह सोचने लगा कि इस दिशा में बंड की चौड़ाई भी कम है, अतः इस एरिया में अगर अवनत सुरंग बनाकर आऊटलेट से जलप्रपात की शक्ल में पानी को नाले में गिराया जाये तो पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के कारण पानी स्वयमेव क्वारी से बाहर निकल जायेगी। माईंस में ऐसे माईनिंग ईंजीनियर भी मौजुद थे जिन्हे कन्ट्रोल्ड ब्लास्टिंग का अनुभव था। मनोज ने आगे सोचा कि बारूद मिले हुए पानी को वैसे ही बाहर छोड़ना पर्यावरण के लिये घातक होगा! उसका भी रास्ता उसे सूझा कि क्वारी के आऊट लेट पर स्कीमर लगाकर बारूद को पानी से अलग किया जा सकता है। अगले ही दिन मनोज ने सारी योजना करके साहब को बताई। उन्हें यह योजना पसंद आयी और उन्होंने इस योजना के क्रियान्वयन का वादा भी किया।

जून का महीना था कुदरत ने मनोज के लिये कुछ और ही सोच रखा था। करीब 2 बजे का समय था। मनोज की पत्नी "मीना" का फोन आया उसने रूंधे गले से बताया कि उसे कैंसर है और उसका FNAC रिपोर्ट पाजीटिव आया है। मनोज का सर चकराने लगा, वह सोचने लगा कि ईश्वर का यह कैसा न्याय है। पहले ही मुसीबतों का पहाड़ क्या कम था कि अब एक और जानलेवा मुसीबत सिर पर आ पड़ी। मनोज ने तुरन्त एक माह की छुट्टी का आवेदन दिया जिसे साहब ने मंजूर कर लिया। मनोज भारी मन से पहाड़गंज आ गया।

घर में परिजनों की भीड़ सी लगी थी। मीना के भाईयों ने सर्वमत से फैसला कर लिया था कि ईलाज के लिये मुम्बई स्थित "बाम्बे हास्पीटल" ही जाना है। सभी मीना को सान्त्वना देने की कोशिश कर रहे थे। अगला दिन रविवार का था। पुने में रह रही भतीजी ने 6 जून का हवाई यात्रा का टिकट और रहने के लिये मरीन लाईन्स में एक हाटेल बुक कर रखा था। 7 जून से 11 जून तक सभी जरूरी टेस्ट हुए। 12 जून को मीना की सफलता पूर्वक सर्जरी "बाम्बे हास्पीटल" में हुई और उसके कैंसर बाधित हिस्से को शरीर से बाहर निकाल दिया गया। 6 कीमोथेरपी, 11 टारगेट थेरेपी एवं 25 दिन के दुसह्य रेडियो थेरेपी ट्रीटमेंट के पश्चात मीना ठीक हो सकी। मनोज अब मन ही मन मैनेजमेंट का शुक्रगुजार था जिन के सहयोग से मीना का दूरूह और अत्यंत खर्चीला ईलाज सम्भव हुआ थी। पत्नी की गंभीर बिमारी के मद्देनजर मनोज का तबादला माईंस से वापस पहाड़गंज कर दिया गया। उसने भी ईलाज के दिनों को छोड़कर शेष दिनों में संयंत्र के कामों में जमकर मेहनत की थी। मनोज को पता है कि संयंत्र का ऋण अदा करने के लिये ताजिन्दगी उसे संजीदगी से काम करना होगा।

इसी बीच मनोज को पता चला कि खदान में उसके द्वारा सुझाई गई क्वारी से पानी निकालने की तकनीक काम कर गयी है और संयंत्र के अयस्क उत्पादन में करोड़ो की बचत हो रही है। उसे लगा कि उसने तबादले की जंग जीत ली है। उसका मन संयंत्र प्रबंधन को कोटिशः दुआएं दे रहा था।

संघर्ष की विजय

श्रीमती अनुराधा धनांक,
सहायक निदेशक (राजभाषा), बी.एस.एन.एल., दुर्ग

इंग्लैंड के मेनचेस्टर शहर की रात 11.30 बज रहे हैं, शहर खामोश है, मेरी टीम की सभी लड़कियां लगातार 8 घंटो के कड़े अभ्यास के बाद थकी– हारी, बेसुध नींद के आगोश में हैं, मुझे अब्बू की बातें याद आ रहीं हैं, जब वे एयरपोर्ट छोड़ने आये थे। जा मेरी लाडो खूब हिम्मत से खेलना, अपने देश का नाम रौशन करना, माटी का कर्ज चुकाना, याद रख।

''रख हौसला इस कदर, कि आसमॉं भी सर झुकाए ।
कर मुकाबला इस शान से, कि दुश्मन भी तेरा कायल हो जाए ।।

वो मोहल्ला वो गली और वो आखिरी, छोटा सा मकान बहुत याद आ रहा है। अब्बू की लाड़ली अपने दो भाई बहनो में सबसे छोटी और चहेती थी, अब्बू मस्जिद में मुअज्जिन थे। उछलती कूदती, मोहल्ले की तंग गलियों में अब्बू का हाथ थामे, उनके संग, मस्जिद के चंदे की रसीद काटने जाती थी। जब हम मस्जिद के पास से गुजरते तो वो बड़ा सा ''हरे रंग वाला मकान'' मुझे बहुत भाता। मैं अब्बू से कहती 'अब्बू जब मैं बड़ी हो जाउंगी न, तब हमसब इसी मकान में एक साथ रहेंगे, फिर आपको चंदे के लिए दूर–दूर चलना भी नहीं पड़ेगा।'' अब्बू ''हट पगली'' कहकर मुस्कुरा देते।

कक्षा तीसरी में थी जब हमारी पाठशाला में आयोजित दौड़ प्रतियोगिता में मुझे प्रथम पुरस्कार मिला। ईनाम में मिली ''एक हॉकी स्टिक''। भाईजान मोहल्ले में हॉकी के चौम्पियन थे। बस, उन्हीं के साथ खेलते हुए हॉकी के सफर की शुरुआत हुई। अकील सर ने तालीम दी और हॉकी के कई गुर सिखाए। फिर राज्य स्तरीय टीम में मेरा चयन हो गया।

एक दिन लगातार 5 घंटों के कठिन, अभ्यास से मेरे तलुवे लहूलुहान हो गए। माँ ने गर्म तेल से पैरों की मालिश की और बटुए से निकालकर पैसे थमा दिए। माँ जानती थी कि मुझे अच्छे जूतों कि जरुरत थी। कुछ दिनों बाद पता चला कि घर में बर्तन कम हो गए हैं, मेरे नए जूतों के लिए भेंट चढ़ गए।

जिंदगी का सबसे खूबसूरत लम्हा था, जब मेरा चयन अंतर्राष्ट्रीय महिला हॉकी टीम में हुआ। पासपोर्ट बनवाने के लिए भाईजान दौड़ –धूप कर रहे थे। लेकिन पैसे कहाँ से आते? इस बार माँ की चूड़ियों के साथ, आया के मनपसंद झुमके भी शहीद हो गए। मैंने खुद से कहा ''आप सभी की ये कुर्बानियां जाया नहीं होंगी।

फिर मैंने हॉकी मैच के लिए इंग्लैंड के मेनचेस्टर शहर की उड़ान भरी, जहाँ कॉमनवेल्थ खेल हो रहे थे। हम न्यूजीलेंड से सेमीफाइनल मैच भी जीत चुके थे। यदि हम फाइनल मैच जीत जाते हैं तो न केवल स्वर्ण पदक बल्कि हर खिलाड़ी को आठ लाख रूपए मिलेंगे। हम वो 'हरे रंग वाला मकान खरीद सकेंगे। मॉं की चूड़ियॉं और आया के झूमके वापस आ जाएंगे। पिछले 9 वर्षों में घर पर ईद नहीं मनाई है मैंने। इस बार ईद पर खूब जश्न होगा।

इसके बाद मुझे कब नींद लग गई पता ही नहीं चला। जब आंख खुली तो याद आया, आज ही शनिवार है। आज हमारा मैच, फाइनल मैच इंग्लैंड के साथ है। सारी लड़कियॉं तैयार हो रही हैं। शरीर बुखार से तप रहा है। न, मैं किसी से कुछ नहीं कहूंगी। पूरे जुनून के साथ मैच खेलना है मुझे, और जीत हासिल करनी है। तैयार होकर मैदान पहुंच गई।

विराम के पहले ही इंग्लैंड की टीम एक गोल कर चुकी है। भारतीय टीम दबाव में है और इंग्लैंड की टीम जीत के लिए आश्वस्त। बस, इंग्लैंड की टीम के इसी विश्वास का फायदा उठाते हुए हमारी टीम की खिलाड़ी नंबर 4 ने गोल दागा।

इंग्लैंड की टीम बुरी तरह बौखला गई है। हम दोनों टीमें बराबरी पर हैं। मैंने बड़ी तेजी से आगे बढ़ते हुए गेंद पर कब्जा जमाया और भागती हुई कोर्ट तक पहुंची लेकिन इंग्लैंड टीम की एक खिलाड़ी ने बड़ी चालाकी से पैर अड़ा दिया, मैं औंधे मुंह गिर गई। तभी स्थिति को भांपते हुए खिलाड़ी नंबर 11 ने गोल दागा। यानि हम, दो गोल और इंग्लैंड की टीम एक गोल। लेकिन तभी इंग्लैंड की टीम ने एक और गोल करके हमें बराबरी पर ला खड़ा किया। अचानक मेरे मुँह से गूंजा ''भारत माता की जय '' और पूरी तीव्र गति से गेंद को लेकर मैं भागी, भागती गई, भागती गई और गोल ....

हम मैच जीत गए। भारत की टीम हॉकी मैच जीत गई। ऐसा लगा मानो इंग्लैंड की 150 वर्षों की गुलामी का बदला हमने आज ले ही लिया। हर तरफ जय–जयकार हो रही है। सभी इस जीत का जश्न मना रहे हैं। लेकिन मेरे भीतर कुछ पंक्तियॉं कौंध रही थी।

''गहन सघन मनमोहक वनतरू, मुझको आज बुलाते हैं।
किंतु किए जो वादे मैंने, याद मुझे वो आते हैं।
अभी कहॉं आराम मुझे, यह मूक निमंत्रण छलना है।
अरे अभी तो मीलों मुझको, मीलों मुझको चलना है ''

यह कहानी पद्म श्री अवार्ड से सम्मानित अंतर्राष्ट्रीय महिला हॉकी खिलाड़ी, छत्तीसगढ़ की शान, श्रीमती सबा अंजुम करीम के जीवन पर आधारित है।

अच्छे लोग बनाम अच्छे लोग

गोपेन्द्र सिंह ठाकुर, लिपिक, केनरा बैंक,भिलाई

जीवन के बहुत से मोड़ों में हमारा सामना तरह– तरह के लोगों से होता है। मोहन के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ।

उन्नीस वर्ष की आयु में मोहन भारतीय वायु सेना में भर्ती हुआ। भर्ती होने के पहले ही उसे पीलिया हो गया था। बीमारी से उठा तो प्रशिक्षण संस्थान का बुलावा आ गया। अपने दृढ़ इच्छा शक्ति के बलबूते पर वह शारीरिक रूप से थोड़ी कमजोरी के साथ भी प्रशिक्षण के लिये चला गया। फौज का प्रशिक्षण था, आरम्भ के दिनों में शारीरिक गतिविधियां अधिक होती थी, जैसे प्रातः कालीन दौड़, व्यायाम, परेड, शाम को पी.टी. आदि। कई बार ऐसा होता था, कि मोहन मैदान में गश खाकर गिर जाता था, फिर साथी उसे उठाते थे, अस्पताल ले जाते थे, वापस आने पर फिर वही मेहनत। मोहन ने अपने प्रशिक्षक से कहा कि उसके लिये थोड़ी रियायत की जाये। प्रशिक्षक ने कहा – मैं तुम्हें रियायत देकर कमजोर नहीं करूंगा, बल्कि जब भी तुम गिरोगे, मैं उठने में मदद करूंगा, लेकिन तुम्हें मानसिक व शारिरिक रूप से मजबूत बनाऊंगा। मोहन को लगता था, कि ये प्रशिक्षक नहीं उसका दुश्मन है।

पच्चीस वर्ष की आयु में मोहन की शादी हो गई। डेढ़ वर्ष बाद उसके आंगन में एक नन्ही कली गुंजन का आगमन हुआ। सितंबर के लगभग आखरी सप्ताह में मोहन अपने इस छोटे से परिवार के साथ पठानकोट (पंजाब) पहुंचा जहां वायुसेना कैंप के निकट ही वह किराये के मकान मे रहने लगा। मकान मालिक का परिवार भी साथ ही रहता था। किराये का देना एक मासिक औपचारिकता थी, अन्यथा ऐसा लगता था, मानो मोहन एक संयुक्त परिवार में रहता हो। गुंजन तो मां–बाप की गोद में कम और उनके साथ रहने लगी। इसी बीच गुंजन का छोटा भाई शितिज का जन्म हुआ। परिवार खुशी–खुशी रहने लगा। प्रशासनिक कारणों से मोहन अपने परिवार सहित कैंप में सरकारी आवास में रहने लगा। लेकिन बच्चे मन से उस घर को नहीं छोड़ पाये। इसी बीच मोहन का स्थानान्तरण नलिया (कच्छ–गुजरात) के लिये हो गया। स्थानान्तरण कोई नई बात नहीं थी, इसलिये इसे स्वाभाविक रूप से लेते हुये मोहन अपने परिवार के साथ सभी दोस्तों के घर मिलने गया, अंत में वह अपने पुराने मकान मालिक के घर पहुंचा। बिछड़ने का गम सभी को था, जब चलने लगे तो बेबे ने कहा–(बेबे पंजाब में मां को कहते हैं)–मोहन तुम लोग सितम्बर के अंतिम सप्ताह में आये थे, और हमें किराया अक्टूबर की एक तारीख से दिया था। बेटा पांच साल पहले की उस सितम्बर का किराया तो देते जाओ। मोहन अवाक रह गया, कि पांच सालों में अब विदाई के समय इन्हें वो कमाई का जरिया याद आ रहा है। क्या हमारा इनका रिश्ता सिर्फ किराये के पैसों को लेकर था ? वहां पैसे देकर मोहन अपने परिवार के साथ चल पड़ा, नये पड़ाव नलिया(गुजरात) की ओर।

जब हम दिल्ली से अहमदाबाद ट्रेन द्वारा जाते हैं तो पालनपुर नामक एक रेलवे स्टेशन पड़ता है, जहां से कच्छ के लिये ट्रेन बदलते हैं, और सामान्यतः वहां दिन–भर रूकना ही पड़ता है।

मोहन का परिवार पालनपुर स्टेशन में आरामगृह में ही था, वहीं प्लेटफार्म पर एक बुजुर्ग ने चाय का ठेला खोला था, जिसमें हल्की–फुलकी चीजें उपलब्ध थी। दिन भर सेवा करते हो गये थे। शाम को जब मोहन अपने दोस्तों के साथ वहां चाय पी रहा था, तभी चायवाले बुजुर्ग ने कहा "मेरा भी एक बेटा है जो तुम लोगों की तरह फौज में है, और अफसर है।" सुनकर मोहन के मित्र ने कहा दादा जी आपका बेटा फौज में अफसर है, और आप चाय बेच रहे हो, अप्रत्याशित था, हां बेटा, मैंने तो चाय बेचकर अपने बेटे को अफसर बनाया, लेकिन अब मेरा बेटा अफसर है, इसलिये चाय बेच रहा हूं, सभी को लगा मानों यह एक सवाल उनके लिये तो नहीं ?

उमड़ते विचारों, दुनिया के प्रश्नों में उलझा मोहन अपने परिवार के साथ सुबह गांधीधाम पहुंचा तो पता चला कि उसकी ट्रेन "नलिया क्वीन" रवाना हो गई थी, मगर एक टैक्सी वाले ने मात्र एक सौ पचास रूपये में ट्रेन रास्ते में मिलवा देने का वादा किया। मोहन सपरिवार उस टैक्सी में चल पड़ा। रास्ते में टैक्सी वाले ने एक होटल में कार रोक दी और मोहन के परिवार से नाश्ता आदि करने के लिये कहा। अभी–अभी तो मोहन पांच वर्ष पूर्व वाले सितम्बर का किराया देकर चला था। मन में विचार चल रहे थे, कि इस टैक्सी वाले को होटल से कमीशन बंधा होगा, इसलिये तो यहां रोका है। लेकिन जब वह पैसा देने काउन्टर पर गया, तो पता चला कि बिल तो टैक्सीवाले ने दे दिया है। ये क्या बात हुई। मोहन ने टैक्सीवाले से पूछा कि "बिल तुमने क्यों दिया है ?" टैक्सीवाले ने कहा, बाबूजी आप अपने कुटुम्ब के साथ पहली बार हमारे कच्छ में पधारे हो, यहां मैं कच्छ का पहला व्यक्ति आप लोगों को मिला तो मेरा फर्ज है, कि मैं इस कच्छ में आपकी खातिरदारी करूं, ताकि आप जितने भी समय कच्छ में रहें, आपका समय अच्छा रहे। मोहन निरूत्तर था, सोच रहा था दुनिया में अच्छे लोग बहुत हैं, बस कभी–कभार कोई दुर्विचार उनकी अच्छाइयां में ग्रहण लगा देता है, सब अच्छे ही तो हैं वह प्रशिक्ष कवे साथी वह परिवार, वह चाय वाला टैक्सी वाला............ सब अच्छे हैं................।

शब्दों की ताकत

श्रीमती भावना चांदवानी, उप प्रबंधक

यूनाईटेड इंडिया इंश्योरेन्स क.लि.,भिलाई

एक नौजवान चीता शिकार पर पहली बार निकला। वह कुछ ही दूर चला था कि एक लकड़बग्घे ने उसे रोक कर पूछा "अरे छोटू कहां जा रहे हो ?

आज मैं पहली बार खुद से शिकार करने जा रहा हूं। चीता रोमांचित हो कर बोला। "हा–हा–हा" लकड़बग्घा हंसा, अभी तो तुम छोटे हो, तुम्हारे अभी खेलने कूदने के दिन है, और क्या शिकार करोगे। हा–हा–हा उसने फिर जोरदार ठहाका लगाया।

चीता लकड़बग्घे की बातें सुनकर उदास हो गया। शिकार के लिये वह बेमन से वह इधर से उधर भटकता रहा, कुछ प्रयास भी किये पर सफलता नहीं मिली, शाम को भूखे पेट ही घर लौटना पड़ा।

अगले दिन चीता फिर शिकार पर निकला, वह थोड़ा सुस्त, थोड़ा उदास सा था। थोड़ा आगे बढ़ने पर एक बूढ़े बंदर ने उसे देखा और रोक कर पूछा "बेटा कहां जा रहे हो।"

"बन्दर मामा मैं शिकार के लिए जा रहा हूं।" बहुत अच्छे बंदर ने कहा तुममें बहुत से गुण है, तुम्हारी ताकत तुम्हारी गति के कारण तुम कुशल शिकारी बन सकते हो, जाओ बेटा तुम्हें जल्द सफलता मिलेगी।

बंदर के यह कथन सुनते ही चीते की सारी उदासी, सुस्ती गायब हो गई। उसमें नए जोश उत्साह का संचार हो गया। कुछ ही समय में सफलता मिल गई। आज वह बहुत खुश था।

हमारे जीवन में शब्द बहुत मायने रखते है, दोनों ही दिन चीता वही था, उसकी ताकत, उसकी फूर्ती, उसकी गति भी वही थी, बस जादू था तो शब्दों का, जिन्होंने कमाल कर दिखाया था।

जिस दिन चीते को हतोत्साहित किया गया, वह कुछ नहीं कर पाया और असफल रहा, पर जब उसको प्रोत्साहित किया गया वही चीता सफल हो गया।

कहानी कहती है:

"शब्द" बहुत ताकतवर होते हैं, हमें बहुत ही सोच समझकर इनका उपयोग करना चाहिये। यही शब्द हमारे विचार बनते हैं, और यही विचार हमारे सामने जीवन की सच्चाई बन कर आते हैं।

हमें हमेशा उत्साहवर्धक व सकारात्मक शब्दों का उपयोग करना चाहिये, क्योंकि ये शब्द हमारी व हमसे मिलने वालों की बात करने वालों की जिन्दगी बदल सकते हैं।

अनुभव, ज्ञान एवं आयु

मनुष्य के विचारों को बदल देते हैं

– हरिऔध

नराकास संस्थानो में सम्पन्न हिंदी दिवस 2015 समारोह

दो दिवसीय मध्य क्षेत्रिय राजभाषा सम्मेलन

2015 एवं पुरस्कार वितरण समारोह

आयोजक - भिलाई इस्पात संयंत्र

नराकास के विभिन्न सदस्य संस्थानों द्वारा राजभाषा पखवाड़े का आयोजन

अब मेरी बारी

सुनील कुमार साव
अनुवादक, निवासी लेखा परीक्षा कार्यालय, भिलाई

दहेज की मांग के कारण ना जाने कितनी लड़कियों की बेमेल शादी होती है। कई बार तो मां बाप भी अपने संतान के साथ गलत कर बैठते हैं। क्या शादी इतनी जरूरी होती है कि किसी के साथ भी सात फेरे लेने पड़ जाए। इससे तो बेहतर है कि लड़कियों को स्वतंत्र विचार के साथ स्वयं निर्णय लेने का अधिकार हो।

घर की साज–सज्जा जोरो पर थी चारों तरफ फूलों की लड़ियां घर की रौनक को चार चांद लगा रही थी। पिता की व्यस्तता के कारण मां के चेहरे पर भी खुशी थी। लगभग तीन चार वर्षों के पश्चात शादी तय हुई थी। कभी सांवले पन के कारण तो कभी दहेज के कारण रश्मि के रिश्ते बनते बनते बिगड़ जा रहे थे। अंततः वह घड़ी आ गई जब रश्मि की शादी तय हो गई। रश्मि की मां ने क्रोधित होकर रश्मि के पिता से पूछी आखिर कितने रूपये में तय किये ये शादी। पिता ने जवाब दिया – सभी समाज में एक समान नहीं होते हैं। लड़के वालों ने कोई दहेज नहीं लिया।

नियत तिथि पर शादी का इंतजाम किया जा रहा था। मेहमान भी आने लगे थे। कभी–कभी मनोहर अंकल भी हमारे घर आते थे, जिसने शादी की मध्यस्थता की थी। मनोहर अंकल के आते ही रश्मि को सामान लाने के बहाने बाहर भेज दिया जाता था, किन्तु एक बार रश्मि ने चुपके से अपने पिता को संदुक में नोटों की गडिडयां रखते देख ली थी। रश्मि की पढ़ाई लिखाई मां के कारण ही संभव हो पाया था।

विवाह का कार्यक्रम अति प्रसन्नतापूर्वक सम्पन्न हुआ। विदाई के समय रश्मि की मां ने रश्मि से कहा बेटी। अपने घर की मान सम्मान की रक्षा करना।

बेटी ने कहा – अवश्य मां। मैं जानती हूं कि मुझे क्या करना है।

रिशेप्सन के दिन छुप छुपाकर रश्मि विक्रांत को देख रही थी। विक्रांत उसके समीप नहीं था, वह हमेशा अपने फोन पर व्यस्त रहता था। एक सप्ताह उपरांत रश्मि ने विक्रांत से बात करनी चाही कि आखिर आप घर पर क्यों नहीं होते। विक्रांत ने उत्तर दिया – क्या तुम्हें नहीं पता। अच्छा एक दिन सब जान जाओगी रश्मि परेशान थी। वह अपनी सास से भी बात करनी चाही परंतु उसके सास ने भी कोई उत्तर नहीं दिया।

लगभग 15 दिन के उपरांत रश्मि ने विक्रांत को फोन की। उधर से जवाब आता है आप कौन। रश्मि घबरा जाती है कि विक्रांत के फोन पर एक औरत। औरत उत्तर देती है मैं विक्रांत की पत्नी – मोना।

यह सुनकर रश्मि के पैर के नीचे जमीन खिसक जाती है। वह अपनी सास के कमरे में जाकर पूछती है कि आखिर यह सब क्या है। उसकी सास रश्मि को सारी सच्चाई बता देती है कि तुम्हारे पिता ने रूपये लेकर तुम्हारी शादी की थी। क्या तुम्हें नहीं पता। रश्मि अपने पिता को फोन लगाती है और पूछती है। पिता कहता है – बेटी, जो हैं अब उसमें एडजस्ट करना सीखों। आखिर तुम्हारी उम्र बीती जा रही थी। तुम्हारे पीछे तुम्हारी दो बहनें भी है। मुझे उसकी चिंता सताने लगी।

रश्मि की सास ने कहा। बेटी आप इस घर की बहु हो। आपको किसी चीज की यहां तकलीफ नहीं मिलेगी। ये घर सम्पन्न हैं। रूपये–पैसों की कोई चिंता नहीं हैं पर विक्रांत के बारे में मत सोचो। समय बिताने के लिए, कोई नौकरी कर लो।

काफी सोचने के बाद मैंने निर्णय लिया और कॉलेज में आवेदन भरा। ड्राइवर अंकल मेरे साथ थे। मैंने उनसे जब सच्चाई पूछा तो ड्राइवर अंकल ने बताया कि विक्रांत ने अपने बोस की बेटी के साथ शादी कर ली है और यह बात विक्रांत ने अपने दादाजी को नहीं बताया है, जिस दिन विक्रांत के दादाजी नहीं रहेंगे। वह अपनी पत्नी को घर ले आयेगा।

रश्मि को एक दिन कॉलेज से नियुक्ति पत्र मिला और इधर उसके (विक्रांत के) दादाजी चल बसे। कुछ दिनों पश्चात रश्मि ने दृढ़ निश्चय कर एक फ्लैट किराये पर ली और घर की जरूरतों की सारी सामान इकट्ठा करने लगी। अगली सुबह, विक्रांत ने मोना (पहली पत्नी) को ले आया और विक्रांत ने रश्मि को तलाक पेपर पर साईन करने के लिए कहा। रश्मि ने तलाक पेपर अपने बैग में रख ली और कहा – आज शनिवार और कल रविवार है। कोर्ट दो दिन के लिए बंद है आपको सोमवार को तलाक पेपर दूंगी।

सोमवार को रश्मि ने विक्रांत को दूसरी तलाक का पेपर दी। विक्रांत झल्ला उठा और कहा – ये क्या है, वह

पेपर कहां है जो मैंने दी थी। तब रश्मि ने अपनी बैग से विक्रांत का दिया हुआ तलाक का पेपर निकाली और उसे फाड़कर फेक दी और रश्मि ने कहा कि ''तलाक तुम मुझे नहीं बल्कि मैं तुम्हें दूंगी'' और साथ ही मैं तुम्हारे खिलाफ कोर्ट में नारी निरातन केस करूंगी। और साथ ही पहली पत्नी के होते हुए तुमने दूसरी शादी कैसे की। तुमने मेरे साथ–साथ अपने दादाजी को भी धोखे में रखा।

और अंततः रश्मि ने अपना सामान पैक किया अैर यह कहकर घर से चली गई कि तुम्हें तुम्हारा घर मुबारक। अब मेरी बारी है आज से मैं अपनी जिंदगी की नयी शुरूआत करने जा रही हूं। यह कहकर अपने पति, अपने ससुराल तथा अपने मायके को छोड़ अपने जिंदगी की नई शुरूआत करने तिरस्कृत भाव से रश्मि चल देती है।

दुःख से बचने का मार्ग है –
शम, दम, संतोष और सत्कर्म
– योग वशिष्ठ

निराश होने की जरूरत नहीं

दयावीर मिश्र, ओसीटी
भिलाई इस्पात संयंत्र

सूरज की गुनगुनी धूप शरीर को मखमली गरमाहट प्रदान कर रही थी। नीरा अपने दैनिक कार्यों को निपटाकर चाय के साथ आनंद ले अखबार पढ़ रही थी। आज अइले सुबह ही नीरा के पति प्रतीक और उनकी बेटी दूसरे शहर गये थे, जहां उनकी बड़ी बेटी का एम.बी.बी.एस. के प्रथम वर्ष में दाखिला लेना था। नीरा और प्रतीक दोनों पेशे से चिकित्सक थे, नीरा अपनी निजी क्लीनिक में और प्रतीक सरकारी अस्पताल में। अपने पेशे की वजह से नीरा और प्रतीक का सामाजिक कार्यों में यथासंभव योगदान रहा करता था।

अखबार पढ़ते–पढ़ते नीरा की आंखें अकस्मात् बुझने सी लगी। नीरा को कई दिनों से इन समाचारों को पढ़कर बैचेनी सी होने लगी थी। दिल्ली का निर्भया केस, बेंगलूर का बी.पी.ओ. के कर्मचारी (महिला) का केस और अब इसकी कड़ी में एक और इजाफा, जो कि उसके अपने शहर में घटा था, और अखबार में उसका विस्तृत वर्णन था। नीरा को लगने लगा कि समस्त पुरूष समुदाय के सिर पर सींग उग आए हैं, पुरूषों का चेहरा बदल कर दानवों के चेहरे में बदलने लगा है। जहां देखो वहां पर स्त्री के साथ अभद्र व्यवहार, अशोभनीय बातें, वह सोचने लगी कि हमारा समाज किस रूप में परिवर्तित हो गया है ? क्या सारे ही ऐसे हैं? अथवा कुछ विशेष कुंठित मानसिकता के लोगों के कारण पुरूषों को संदेह की नजर से देखने की परिपाटी चल पड़ी है। इस विषय में नीरा प्रतीक से बातें करती थी। प्रतीक काफी समझदार थे, उन्होंने नीरा को समझाया कि सदैव ही ऐसा नहीं होता, लेकिन कुछ घटनायें ऐसी होती है, जिन्हें देखकर उस वर्ग या समुदाय समूह विशेष का बहुमत का नजरिया मान लिया जाता है। लेकिन नीरा को लगने लगा, कि वातावरण में विषैला धुंआ घुलते जा रहा है, उसका दम घुटते जा रहा है।

इतना सोचने के बाद नीरा को लगा कि अब और समय व्यतीत न कर क्लीनिक जाना चाहिये, आज कुछ ज्यादा लोगों को अपार्टमेंट दे दिया गया है, यह सोचकर नीरा उठ पड़ी। दिन–भर सारे मरीजों और बाकी कामों को समाप्त करने के बाद अपने शयन कक्ष में आई। रोज की तरह आज भी नीरा अपनी बेटी और प्रतीक को इंतजार करने लगी, और उसे याद आया, कि वह दोनों तो शहर से बाहर हैं, रात को सोने से पहले तीनों आपस में बातें किया करते थे, याद आते ही नीरा मुस्कुरा दी।

चारों ओर अंधकार फैला था, तारे अपने प्रकाश से आकाश में चमचमाती हुई आकृति बना रहे थे। ऐसा लग रहा था, कि सारी सृष्टि सोई हुई है। अचानक उसके पति के नंबर से फोन आया, लेकिन दूसरी ओर आवाज किसी अजनबी की थी, उसने बताया की आपके पति के कार का किसी और वाहन से दुर्घटना हो गया है, और उन्हें तथा आपकी बेटी को अस्पताल भेजने की व्यवस्था की जा रही है। उन्हें फोन पर ही अस्पताल का पता बता दिया गया। नीरा ने आनन–फानन में अपने परिचित चिकित्सकों को फोन किया और उस अस्पताल में व्यवस्था कर दी गई, नीरा ने ट्रेवल एजेन्ट को फोन कर टेक्सी मंगवाई और दूसरे शहर के अस्पताल के लिए निकल पड़ी, रात के लगभग ढाई बजे होंगे, नीरा के पास कुछ नगदी भी था, टैक्सी ड्रायवर ने बताया कि आगे जाम लगा हुआ है, मैडम मैं आपको दूसरे रास्ते से ले चलता हूं। नीरा ने जल्दबाजी में हां तो कह दिया, लेकिन जब टैक्सी दूसरे रास्ते में चलने लगी, रास्ता सुनसान था, अचानक गाड़ी हिचकोले खाने लगी, और एक ओर जाकर रूक गई। नीरा को ऐसा लगा कि फिर वहीं विषैला धुंआ आने लगा है, ड्रायवर के मुंह से आवाज आई की मैडम गाड़ी में सड़क पर पड़ा खीला घुस गया है, और यहां पर पंचर बनाने की कोई व्यवस्था नहीं है, और मैं स्टेपनी भी भूल आया हूं, आप यहीं पर रूकिये मैं आ रहा हूं, कोई व्यवस्था करके, नीरा को एक घंटे लग गए, अंततः वह अस्पताल पहुँची जहाँ उनके पति एवं बेटी अब खतरे से बाहर बताये गए। यह जानकर उन्होंने चैन की साँस ली।

उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक चलते रहो

– विवेकानंद

अमीर या गरीब

असीम साहू, वरि. प्रबंधक, सेट भिलाई

एक धनी व्यक्ति था, उसके परिवार में वह उसकी पत्नि एवं उसका एक लड़का था। उसे अपने धनी होने का घमंड था। वह और उसकी पत्नी अपने लड़के को हमेशा यह समझाने का प्रयत्न करते थे, कि इस संसार में सब कुछ धन ही है परन्तु लड़का इस बात को कोई महत्व नहीं देता था, एक बार पिता ने अपने बेटे के साथ एक गांव जाने का विचार किया, इस उद्देश्य के साथ कि जब उसे वहां की गरीबी दिखेगी तब वह धन संपत्ति का महत्व समझेगा।

अतः वह धनी व्यक्ति अपने बेटे के साथ एक गांव गया और वहां एक किसान के घर और खेत मे कुछ दिन बिताये। जब वे वापस लौट रहे थे, तब पिता ने अपने बेटे से पूछा कि बेटे तुम्हे समझ में आया पैसे का महत्व तो बेटे ने कहा ———

"हमारे पास केवल एक कुत्ता है, रखवाली करने के लिये, जबकि उनके (गांव वालों के पास) कई"

"हमारे पास केवल दो विदेशी लालटेन है जबकि उनके पास अरबों तारें, आसमान पर"

"हमारे पास नहाने के लिये केवल एक स्विमिंग पूल है जबकि उनके पास पूरी नदी"

"हमारे पास घुमने के लिये एक बगिचा है जबकि उनके पास पूरी धरती जो कभी खत्म ही नहीं होती"।

"हमारे पास रखवाली के लिए घर के चारों तरफ बड़ी—बड़ी दिवारें हैं, जबकि उनके पास उनके कई सारे दोस्त और पूरा गांव"

"हम अपना खाना बाजार से खरीदते हैं पर वे अपना खाना खुद बनाते हैं" (बेटे का तात्पर्य था खेती से) बेटे की यह बात सुनकर उस धनी पिता को कोई उत्तर देते नहीं बना।

अंत में बेटे ने कहा—"धन्यवाद पिताजी मुझे यह अहसास दिलाने के लिये की हम कितने गरीब हैं"।घर लौटकर धनी व्यक्ति ने सारी बातें अपनी पत्नि को बताई और दोनों ने काफी सोच—विचार किया। इन सब बातों से दोनों का हृदय परिवर्तन हो गया, एवं उन्होंने अपनी सारी संपत्ति एक वृद्धा आश्रम को दान कर दी एवं अपने बेटे के साथ गांव जाकर बस गये।

सद् चरित्र का निर्माण
सद् विचारों से होता है

– शिवानंद

भारत राष्ट्र में हिंदी राष्ट्रभाषा क्यों नहीं? विचारणीय प्रश्न

बड़े कष्ट की बात है दशकों हो गया हमें अपनी गुलामी उतारे, लेकिन भाषा के मामले में हम अब भी गुलाम बने हुए हैं। किसी विचारक ने कहा है कि जो अपनी बात अपनी भाषा में नहीं कह सकता, वह अपनी आर्थिक, औद्योगिक, वैज्ञानिक, राजनीतिक व शैक्षिक परम्पराओं को विदेशी छाया से मुक्त रखने का प्रयास भी करे तो बेमानी होगी।

भारत आज भी विदेशी भाषा के सहारे देशी हित साधने का प्रयास कर रहा है। अपनी वैश्विक स्तर पर समृद्ध हिंदी को अपने ही संविधान में राष्ट्रभाषा का स्थान नहीं दिला सका।

भारतवर्ष के संविधान में हिंदी को 'राजभाषा' का पद दिया गया है। इसमें Official Language का सामान्य अर्थ है– कार्यालय की हिंदी।

भारतवर्ष विश्व का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रजातांत्रिक राष्ट्र है।

स्वतंत्रता आंदोलन में देश के सपूतों ने अपना दायित्व निभाया और 15 अगस्त, 1947 की अर्ध रात्रि को आजादी के भगवान भास्कर का उदय हुआ। देश के प्रथम राष्ट्रपति को देश के दिशा–निर्देशन का सुअवसर मिला। राष्ट्र को प्रधानमंत्री के रूप में अपना नेता मिला।

राष्ट्र का प्रतीक राष्ट्रध्वज मिला। प्रधानमंत्री के नायकत्व में भारतवर्ष के प्रगति और उन्नति का मार्ग प्रशस्त हुआ।

प्रजातांत्रिक राष्ट्र भारतवर्ष का संविधान भी ''सर्वजन हिताय और सर्वजन सुखाय'' के साथ सबको समान रूप से विकास के पथ पर अग्रसर रहने का अवसर प्रदान करता है। इसमें समय, परिस्थिति और आवश्यकतानुसार परिवर्तन करके राष्ट्र को अनुकूल दिशा और गति अपनाने का अवसर मिलता है। पर जब राष्ट्र की भाषा का प्रश्न आता है तो हम मौन हो जाते हैं।

भाषा भी राष्ट्र को एक सूत्र में बांधती है। राष्ट्र को एक सूत्र में बॉधने वाली भाषा को राष्ट्रभाषा की संज्ञा दी जाती है। हिंदी भारतवर्ष में मातृभाषा, माध्यम भाषा, राजभाषा, संपर्क भाषा, संचार भाषा, इलेक्ट्रानिक भाषा आदि रूपों में प्रयुक्त होने की दृष्टि से राष्ट्रभाषा है। भारत के वर्तमान संविधान में 22 बाईस राष्ट्रीय भाषाओं को मान्यता मिल चुकी है। इस प्रकार हिंदी सिद्धांत और व्यवहार दोनों दृष्टियों से भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी है।

पर सर्वाधिक विचारणीय प्रश्न यह है कि वही हिंदी अत्यंत सीमित क्षेत्र कार्यालय में प्रयुक्त भाषा (Official Language) का अर्थ द्योतन करती है, जबकि उसे भारतवर्ष की संस्कृति, विस्तृत प्रकृति और प्रयोग का बोध कराने का अवसर मिलना चाहिए। क्योंकि राजभाषा की निश्चित हिंदी (मानक हिंदी) पारिभाषिक शब्दावली पर आधारित हिंदी है। यह बात अलग है कि प्रत्येक मंत्रालय,क्षेत्र विशेष आदि की परिभाषिक शब्दावलियों के निर्माण में 'केन्द्रीय हिंदी निदेशालय' की प्रशंसनीय भूमिका रही है।

अब आइए, राष्ट्रभाषा के विस्तृत आयाम में भारत का मुखरित होता अपनापन देखें। हिंदी क्षेत्र के प्रत्येक व्यक्ति की क्षेत्रीय बोल–चाल की भाषा राष्ट्रभाषा है, हिंदी क्षेत्र की प्रत्येक बोली राष्ट्रभाषा का प्रभावी अंग है, हिंदी की प्रत्येक उप–भाषा राष्ट्रभाषा है। हिंदीतर क्षेत्रों के व्यक्तियों द्वारा बहुल रूप में प्रयुक्त मुम्बईया हिंदी, कलकतिया हिंदी, आदि विविध रूप में राष्ट्र को एकसूत्र में बांधनेवाली राष्ट्रभाषा है। 1000 से अधिक वर्षों से लिखा जानेवाला समृद्ध हिंदी साहित्य का इतिहास तो राष्ट्रभाषा की परम धरोहर है। इतना ही नहीं हिंदी की विभिन्न बोलियों में लिखित अथवा प्रयक्त लोक साहित्य में अंचल विशेष की ही नहीं राष्ट्र की मधुर और मनमोहक भावभंगिमा मुखरित करने वाली लोकभाषा राष्ट्रभाषा का राष्ट्रीय रूप है। ऐसे में जरूरत है कि भारतवर्ष के संविधान में हिंदी को वह पद दिया जाये, जिसमें इसकी गरिमा का बोध हो।

देखें तो स्वतंत्रता आंदोलन के समय देश को एकसूत्र में बांधनेवाली हिंदी राजभाषा नहीं राष्ट्रभाषा थी। इतिहास साक्षी है कि स्वतंत्रता आंदोलन में जुड़कर राष्ट्रीय स्वर को बुलंद करने के लिए अनेक हिंदीतर भाषा भाषियों ने हिंदी सीखी थी। वर्तमान समय में कश्मीर से कन्याकुमारी और असम से मुम्बई तक पूरे देश को एकसूत्र में बांधनेवाली संपर्क भाषा हिंदी ही है। इससे क्या यह नहीं लगता कि भारतीय संविधान में हिंदी को राष्ट्रभाषा के स्थान पर मात्र राजभाषा का स्थान देकर भारतीय जन–मानस और राष्ट्र के साथ अन्याय है? यहाँ यह भी विचारणीय है कि भारतीय संविधान और व्यावहारिक रूप में हिंदीतर भाषाभाषी राज्यों में उनको अपनी भाषा के प्रयोग का अधिकार और प्रोत्साहन दिया गया है। भारतीय भाषाओं को दिया जानेवाला प्रोत्साहन प्रशंसनीय है। इन भारतीय भाषाओं के राज्य विशेष में प्रयोग पर 'राजभाषा'

की संज्ञा देते हैं जो उचित है, पर राज्य विशेष की भाषा और राष्ट्र की भाषा का एक ही स्तर पर नाम 'राजभाषा' क्या विचारणीय नहीं है।

वैश्वीकरण के युग में हिंदी और हिंदुस्तान का परचम लहरा रहा है। बहुराष्ट्रीय और बड़ी–बड़ी कंपनियों को भारतवर्ष अपनी ओर खींचता जा रहा है। ये कंपनियाँ भारतवर्ष को बहुत बड़ा बाजार समझ अपने पैर पसारती जा रही है। इसके लिए उन्हें हिंदी का सहारा लेना पड़ रहा है। उनके विज्ञापन को देखिए, अंग्रेजी पर हिंदी का गहराता रंग, भारतवर्ष में हिंदी के गहरे प्रभाव का प्रमाण है। इस प्रकार वैश्वीकरण के दौर में भारतीय जनमानस को देखकर बाजार में भी हिंदी का रंग उभर रहा है, ऐसे में संविधान में हिंदी को 'राष्ट्रभाषा' पद क्यों नहीं ?

एक ओर जब विदेश में भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी अपना व्याख्यान हिंदी में देते हैं, तो विश्व क्षितिज तालियों की गड़ागड़ाहट से गूँज उठता है। वर्तमान प्रधानमंत्री विविध देशों के दौरों पर 'हिंदी' में भाषण देते हैं। योगऋषि स्वामी रामदेव जैसे व्यक्तियों को 'हिंदी' समझाने के लिए कोई दुभाषिये की जरूरत नहीं पड़ती। राष्ट्रीयता और राष्ट्रभाषा के सम्मान के ऐसे पल को आँखों से देखकर सिर गर्व से ऊपर उठ जाता है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया में संचार माध्यमों का विशेष योगदान है। इसलिए वर्तमान युग को मीडिया का युग भी कहा जाता है। भारतवर्ष में गत दो दशकों से हिंदी का समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में आशातीत विस्तार और विकास हुआ है। पहले इने–गिने राष्ट्रीय दैनिक हिंदी समाचार पत्रों का प्रकाशन होता था। आज विभिन्न स्थानों पर दर्जनों दैनिक समाचार पत्र उपलब्ध हैं। हिंदी समाचार पत्र महानगर, उपनगरों से संबंधित परिशिष्ठ का प्रकाशन हिंदी की लोकप्रियता और लोगों की जागरूकता, ज्ञानार्जन की अभिरूचि के प्रमाण हैं। संचार माध्यमों में दूरदर्शन सबसे प्रभावी दृश्य–श्रव्य माध्यम है। दूरदर्शन पर प्रतिदिन हिंदी के नए–नए चैनलों का आगमन और चौबीसों घंटे प्रसारण में हिंदी की लोकप्रियता और राष्ट्रोन्नयन का सबल प्रमाण है।

इसी प्रकार विश्व पटल पर हिंदी के माध्यम से राष्ट्र को गौरव प्रदान करने वाले संचार माध्यमों का अपना महत्व है।

ऐसे में संविधान में राष्ट्र की भाषा को वह नाम भी दिया जाना चाहिए, जिसमें हिंदी के विविध रूपों और उनके प्रयोक्ताओं को स्थान मिल सके। माना कि लंबे समय तक स्वतंत्रता आंदोलन के बाद देश को आजादी मिली और हिंदी एवं हिंदुस्तानी में से हिंदी को अपनाया गया। उस समय हिंदी को भारतवर्ष की 'राजभाषा' घोषित करना गर्व का विषय रहा है। आज भारत को स्वतंत्र हुए छह दशक से अधिक समय बीत चुका है। भारत विश्व के समक्ष सर्वाधिक प्रभावी लोकतांत्रिक राष्ट्र बन चुका है। तो अब देश को राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान, राष्ट्रनेता की तरह राष्ट्र की गरिमा को विश्व पटल पर अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली हिंदी को संविधान में भी 'राष्ट्रभाषा' का दर्जा मिलना चाहिए। इससे भाषा सम्मानित होगी ही, भारत का वैश्विक महत्व भी बढ़ेगा।

साभार –

योग संदेश वर्ष 13, अंक 04 के दिसंबर 2015 में प्रकाशित

प्रो.नरेश मिश्र, सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली

का आलेख

बुद्धिमान, विवेक से, साधारण मनुष्य
अनुभव से तथा अज्ञानी
आवश्यकता से सीखते हैं

– सिसरो

आखिरी इच्छा

दीपशिखा प्रसाद
वरिष्ठ प्रबंधक (सम्पर्क एवं प्रशासन)

आन्ध्र प्रदेश का छोटे से गाँव में एक छोटा सा परिवार रहता था उनमें आपस में खुशिया थी अपरम्पार नन्ही मुन्नी दो बेटियां कुछ जमीन और एक छोटा सा मकान जमीन जिसमे ये लोग खेती करके अपना गुजर बसर कर रहे थे।

अपने परिवार को सदा प्रसन्न रखने के लिए माता पिता हर सम्भव प्रयत्न में करते रहते थे। बेटियों को अच्छी पढाई एवं अच्छे संस्कार दे इसी तरह दिन बीत रहे थे, कि अचानक उनके घर पर मुसीबतों का पहाड़ ही टूट पड़ा। पिता जी को बुखार आया और उन्हें अस्पताल में भरती कराना पड़ा। डॉक्टरों का कहना था कि बीमारी गम्भीर है ऑपरेशन करना पड़ेगा तथा इलाज में बहुत खर्चा आएगा। जितना जल्दी हो आप लोग पैसा जमा करो तभी इलाज सम्भव होगा, इस तरह अस्पताल में कितने दिन रहोगे पूरा परिवार स्तब्ध डाक्टर से पूछा गया, कि ऑपरेशन यदि कराते हे तो कितने दिन तक ठीक रहेंगे बाद में तो तबियत नहीं बिगड़ेगी और ऑपरेशन के बाद दवाई कब तक खाना पड़ेगा, इतना पूछने पर डाक्टर ने जो कुछ कहा उसके बाद उनके पैरो तले ही जमीन खिसक गई। मतलब ऑपरेशन के बाद जो भी खर्चा होगा उसके बाद जीवन भर 20,000 रुपये का खर्चा दवाई का हर महीने ऑपरेशन में 6 लाख फिर भी कोई गारंटी नहीं कि मरीज पूरी तरह से ठीक हो। और निर्णय मरीज के परिजनों पर छोड़ दिया जवाब में मरीज ने स्वयं ही डॉक्टर से बात की और कहा मैं इलाज नहीं करवाऊँगा क्योकि मैं अपना खेत खलिहान बेच कर इलाज करा लूँगा, किन्तु ठीक होने कि सम्भावना भी जब नहीं है तो इलाज कराने से क्या लाभ, मरना तो है ही इसमें केवल मेरी ही मृत्यु होगी लेकिन इलाज कराता हूँ तो हमारे पास कुछ भी नहीं बचेगा ना मकान ना ही खेत मेरे साथ मेरा पूरा परिवार ही सड़क पर आ जाएगा यह मै हर्गिज नहीं कर सकता।

इलाज में सब बेच कर तो हमारे पास कुछ भी नहीं बचेगा पूरा परिवार मर जायेगा। मैंने स्वीकार कर लिया है कि जब तक जीवन है इसे ऐसे ही निकाल लूँगा, कम से कम मेरा परिवार तो ठीक से अपना जीवनयापन मेरे बाद कर सकेगा यही मेरी आखरी इच्छा है।

डाक्टर साहब हैरानी से उसकी ओर देखते रहे और मुस्कुरा के बोले तो फिर अब आपका निर्णय यही है तो मैं क्या कर सकता हूँ। हमारा पहला कर्तव्य है मरीज को ठीक करना, किन्तु आज तक मुझे ऐसा मरीज कभी नहीं देखने को मिला। जिसने अपने परिवार की खातिर अपनी बिमारी से लड़ना ही ठीक समझा और अपने आप को तैयार कर लिया फिर अंत अब कुछ भी हो मुझे मंजूर है। ईश्वर ने जितना समय और सांसे मेरे लिए रखी है वही में पूरा करूँगा। अब तो केवल वक्त का इंतजार है, ईश्वर कितने दिन मुझे मेरे परिवार का साथ देता है। मैने अपने जीवन में यही अनुभव किया कि अब तक मैं अपने ही दुःख से बहुत दुखी था किन्तु मैने अपने से भी ज्यादा दुःख में डूबे लोग देखे हैं। इंसान केवल अपने बारे में ही सोचता है। अपनी खुशी अपना दुःख किन्तु जब बाहरी दुनिया में कदम रखता है। तब पता चलता है, कि मुझसे भी ज्यादा संघर्ष करने वाले लोग इस दुनिया में हैं। प्रत्येक व्यक्ति को सुख का एहसास जब होता है तब उसे वक्त का पता ही नहीं चलता। किन्तु दुःख का हर पल व्यक्ति को भारी पड़ता है। इस कठिन परिस्थिति में भी इस परिवार ने अपना जो निर्णय लिया उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाये उतनी कम है।

यशपूर्ण जीवन का एक व्यस्त घंटा
अपयश के युगों से बेहतर है
– वाल्टर स्काट

लौह नगरी दल्ली राजहरा की एक झलक

प्राकृतिक वादियों से घिरी लौह नगरी दल्ली राजहरा किसी पहचान की मोहताज नही है। अपने गोद में समेटे लौह अयस्क के भंडार की बदौलत दल्ली राजहरा शुरुआत से ही देश की शान कही जाने वाली भिलाई इस्पात सयंत्र की जान रही है। विगत कई दशकों से भिलाई इस्पात सयंत्र के कदम से कदम मिलाते हुए इसने अपना योगदान दिया है। यह कहना गलत नही होगा कि देश का शायद ही कोई कोना बचा होगा जहाँ यहाँ के लौह अयस्क से बने इस्पात का उपयोग न हुआ हो। यह लौह नगरी निश्चय ही सभी भारतवासियों की जिंदगी से कहीं न कहीं जुड़ी है। छत्तीसगढ़ के बालोद जिले में स्थित यह स्थान भिलाई से महज 90 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। रेल एवं सड़क दोनों ही यातायात के साधनों से जुड़े होने के कारण ऐसा लगता ही नही कि यह एक खनन क्षेत्र है। सुख सुविधाओं के सभी सामान जो शहरी क्षेत्रों में मिलते है वो भी यहाँ आसानी से मिल जाते हैं। यह स्थान प्रकृति के साथ विकास का एक अदभूत नमूना पेश करती नजर आती है।

इस लौह नगरी में कुल पाँच खदानें हैं दल्ली खदान, राजहरा खदान, झरनदल्ली खदान, दल्ली मानवीकृत खदान एवं महामाया खदान। दल्ली यंत्रीकृत खदान क्षेत्रफल एवं उत्पादन के हिसाब से स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड की सबसे बड़ी खदान है। इस खदान को 2001 से आईएसओ 14001 का प्रमाण पत्र उपलब्ध है। तमाम कठिनाइयों के बावजूद यह खदान समूह हर साल औसतन 9.5 मिलियन टन लौह अयस्क भिलाई इस्पात सयंत्र को भेजने में सफल रहा है। जब हर रोज इस लौह नगरी से मालगाड़ी लौह अयस्क को लेकर छुक–छुक करती भिलाई की तरफ प्रस्थान करती है तो ऐसा लगता है कि वो गुनगुनाती जाती है – "ई खदान है अइसन खास, करे है यह देश का विकास" खनन क्षेत्र में सुरक्षा,स्वास्थ्य एवं पर्यावरण का मसला हमेशा से ही एक ज्वलंत मुद्दा रहा है। इस लौह नगरी ने उत्पादन के लक्ष्य की प्राप्ति इन विषयों को दफन कर प्राप्त करने का कभी प्रयास नही किया। " स्वच्छ पर्यावरण, सुरक्षा साथ फिर होती उत्पादन की बात " को अपनी कार्यशैली में इस लौह नगरी ने आत्मसात किया है। निरंतर प्रयास के कारण ही हमारी दो खदाने दल्ली मानवीकृत एवं महामाया खदान " राष्ट्रीय सुरक्षा पुरस्कार " जीतने में सफल रही है ।

तकनीकी तौर पर भी इस लौह नगरी ने समय के साथ हमेशा कदम से कदम मिलाया है। कम लागत में ज्यादा उत्पादन के लक्ष्य की प्राप्ति में तकनीकों का उपयोग इस लौह नगरी ने बखूबी किया है। मानवीकृत से यंत्रीकृत का चरण, विद्युत मशीनों से डीजल चालित मशीनों के बदलाव का समय इत्यादि बहुत सारे उदहारण रहे हैं, जिसे लोगों के द्वारा बड़ी आसानी से आत्मसात करते देखा गया है।

यहाँ के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के कठिन श्रम एवं कभी न हार मानने वाले जज्बे को निश्चय ही निम्न पक्तियां चरितार्थ करती है :–

" आने दे सब देख लेंगे जमाना।

है बाजुओं में बल, तो डर किसका याराना"।।

इस दल्ली राजहरा के परिचय में टाउनशीप में होने वाली क्रियाकलापों पर एक झलक तो बनती ही है।

हर रोज सूरज उगने के साथ जिंदगी यहाँ जागती है। जिंदगी ताजगी भरी रहे इसके लिये यहाँ का खूबसूरत सप्तगिरी उद्यान बाहें फैलाएँ सभी लोगों का स्वागत करती है। उद्यान के समीप में बना अर्जुन रथ हमेशा न्याय एवं पुरुषार्थ की याद दिलाता है जो लोगों में एक नया जोश पैदा कर देता है। हर घर में बने बगीचे में बैठ कर हर रोज जिंदगी पेपर एवं इंटरनेट के माध्यम से दुनिया से जुडती है,खबर अच्छी है या बुरी प्रश्न इसका नही है, परिवार के साथ घर के बगीचे में बैठकर चाय पीने का मजा ही कुछ और है।

धीरे–धीरे सूरज आसमान की ओर चढ़ता है। बच्चों का समूह डी.ए.व्ही. विद्यालय की तरफ प्रस्थान करता हुआ दिखाई देता है। घर के पुरुष कार्यस्थल की तरफ प्रस्थान करने लगते हैं। घर की महिलाएँ घर का काम–काज निपटाकर निकल रही है घर से बाहर समाज उत्थान में विशेष योगदान देने।

दल्ली राजहरा महिला समाज सही मायने में समाज के उत्थान में महिलाओं की भागीदारी को पूर्णरुपेण चरितार्थ करती है। विगत कई वर्षों से विभिन्न प्रकार के सामाजिक कार्यक्रम उदाहरणार्थ गरीब बच्चों के लिए बाल विद्या मंदिर, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य शिविर एवं आवश्यक कपड़ों का वितरण, गरीब महिलाओं के लिए लघु उद्योग इत्यादि महिला समाज द्वारा संचालित किये जा रहें है। आधुनिक भारत के निमार्ण में महिलाओं का योगदान कैसा होना चाहिए को दल्ली राजहरा का महिला समाज एक अनूठा उदहारण प्रस्तुत करता नजर आता है।

शाम का समय, दल्ली राजहरा का सिटिजन क्लब दुधिया रोशनी में नहा रहा है। लोग दिन की थकान मिटाने एवं नई उर्जा पूर्ण प्रस्फुटित करने के लिए क्लब की ओर रुख कर रहे है। वहाँ उपलब्ध जिम, स्पोर्ट्स एवं तरणताल लोगों के मनोरंजन एवं स्वास्थ्य को पूरा ख्याल रख रही है।

यह लौह नगरी दल्ली राजहरा अनेकता में एकता को समेटे हुए अपने आप में एक छोटा भारतवर्ष नजर आता है। देश के हर प्रान्तों की सांस्कृतिक झलक को अपने में समेटे हुए यह जगह हर त्यौहार पूरे सामाजिक सौहार्द्र के साथ मनाता है।

साल के 365 दिन अनवरत कार्यशील यहाँ की खदाने लौह अयस्क को उत्पादित करती हुई भारतवर्ष के विकास रूपी रथ के पहिये को आगे बढाने में अपना योगदान दे रही है।

सोच विचार कर कार्य करने वाला
सफलता प्राप्त करता है

– महाभारत

अदला-बदली

प्रवीन राय भल्ला (पी पी सी)
भिलाई इस्पात संयंत्र

आज की रात्रि पाली उसके लिए काफी कठिन थी। आखिर इस्पात बनाना कोई बच्चों का खेल तो नहीं। तपते हुए लोहे को सही आकलन के साथ और ग्राहक के उपयोग हेतु बनाना काफी चुनौती भरा कार्य है। अनेक चुनौतियों और झंझटों से झूझते हुए पवन ने सोचा, आज तो नाश्ता करने के बाद जम कर सोउंगा।

पर हर दिन एक जैसा तो नहीं होता न! घर पहुँच कर नाश्ते को तैयार न पा कर पत्नि से पूछा तो पता चला कि उसको अपच हो गयी और साथ ही कमजोरी लग रही है। वह समझ गया कि यह कल शाम के गोलगप्पों का असर है जो कि बहुत चटकारे ले–ले कर खाए थे। खैर, उसने पूजा को अस्पताल चलने को कहा और स्कूटर निकालने चला गया। पर ये क्या? पूजा ने बिलकुल नकारात्मक अंदाज में कहा दृ अस्पताल तो दूर, मैं तो घर के बाहर भी नहीं जा सकती।

वह असमंजस में पड़ गया, जूनियर अफसर होने के कारण उसके पास कार भी नहीं थी और समय भी इतना अधिक न था कि आटो इत्यादि का इंतजाम कर पाता। उसके मन में एक विचार आया कि क्यों न कंपनी के अस्पताल जाकर स्वयं को दिखाकर दवाई ले आऊं, आखिर दवाई ही तो चाहिए। उसने समय न गवांते हुए बुकलेट उठाई और अस्पताल पहुँच गया।

संताल में भीड़ नहीं पाकर डाक्टर से मुलाकात जल्दी हो गयी और उसने अपना पूरा दुखड़ा सुना कर सारे लक्षण बता दिये जो उसकी पत्नी को थे। डाक्टर ने तुरंत ब्लड प्रेशर नापने की मशीन लगाकर नब्ज देखी और गंभीर मुद्रा में कहा तुम्हारी इतनी तबियत खराब है और तुम नाईट शिफ्ट कर रहे हो? डाक्टर ने आदेश दिया –चलो बेड पर लेट जाओ और फिर नर्स को कुछ समझा कर अपने काम में व्यस्त हो गये। पवन को जैसे सांप सूंघ गया हो और वह न चाहते हुए भी बेड पर लेट गया।

नर्स ने एक इंजक्शन देकर ग्लूकोस की बोतल लगा दी। वह असहाय सा अपने आपको कोसने लगा और किसी अनहोनी की आशंका से विचलित हो गया। मरता क्या न करता, वह टकटकी लगाये पूजा के बारे में सोच सोच कर परेशान हो रहा था। उसे एहसास होने लगा कि डाक्टर को झूठ बोल कर बहुत बड़ी परेशानी मोल ले ली है, पर पत्नी की हालत ही ऐसी थी, आखिर कुछ तो करना ही था। वह सोचने लगा कि अगर पोल खुल गई तो न सिर्फ डाक्टर से डांट खानी पड़ेगी बल्कि आफिस की कार्यवाही हो गई तो पता नहीं और क्या होगा।

पर यह क्या!, नर्स ने आकर बताया कि एक और एंटीबायोटिक इंजक्शन लगाना है।

वह तो जैसे पत्थर सा हो गया। अपने अस्पताल में इतना अच्छा इलाज होता है, उसे यह आज ही महसूस हुआ। यह सब सोचते–सोचते उसे एक झपकी भी लग गई और वह निद्रा के आगोश में समा गया।

लगभग एक घण्टे के बाद उसकी नींद खुली तो रात्रि पाली के डाक्टर साहब जा चुके थे, एक अन्य डाक्टर ने उसका निरीक्षण किया और कुछ दवाईयां लिख कर घर जाकर आराम करने को कहा। पवन को तो जैसे सौगात मिल गई हो, वह द्रुत गति से घर की ओर चल पड़ा। आज तो पूजा उसे माफ नहीं करेगी, सोचते सोचते घर पहुंचा तो देखा वह शांति से सो रही है। उसका मन किसी आशंका से काँप उठा और डरते हुए उसने पूजा के माथे को छुआ। पूजा घबरा कर उठी और पवन से लिपट गई, इससे पहले वह अपनी सफाई देता, पूजा बोली पवन, तुमने मुझे मौत के मुँह में जाने से बचा लिया। वह कैसे ?, अचंभित सा उसने पूछा। पूजा ने बताया कि वह एक भयानक सपना देख रही थी जिसमें यमराज उसे खींच कर ले जा रहें हैं। अगर पवन उसे वापस नहीं खींचता तो वह चली गई होती। पवन मन ही मन मुस्कराया और भगवान का धन्यवाद दिया। बड़ी मेहनत से लायी दवाईयों को उसने पूजा के हाथ पर रख दिया और सोचने लगा नेकी करते–करते कहीं बदले में यमराज उसे ही न ले जाता।

दु:ख का मूल कारण तृष्णा है

– महात्मा गाँधी

लघुकथा - मनोरंजन नही जीवन

प्रशांत कुमार तिवारी, वरि. स्टोर कीपर,
शा.वि.का., के. वि. स.

एक बार की बात है, जंगल में सभी जानवर प्यार से रहते थे। सभी में एकता थी, शांतिपूर्ण जीवन था ,आपस में भाईचारा था। जैसे जैसे समय निकलता गया, उन्होने नए मनोरंजन के रूप में टेलिविजन के बारे में सुना तथा उसे जंगल में ले आए। टेलिविजन को देख कर उनके बीच मनोरंजन तो हुआ पर सदभाव कम होता गया, आपस में प्यार के स्थान में द्वेष ने ले लिया। अब वे इस इंतजार में होते थे कि कैसे दूसरों को नीचा दिखाये। टी वी सीरियल से ऐसी नकारात्मक विचारो को जाना जिसे वे कभी सपने में भी नही सोच सकते थे। उन्हें लगा कि वे पहले किस दुनिया में रहते थे, अब लोग कहाँ पहुच गए है, शायद उनके ये नए विचार विकास के लिए आवश्यक हो यह सोच कर उन्होंने अपने आप को बदल लिया।

अब सभी की सोच बदलकर नकारात्मक हो गई थी। उनके बीच अब अविश्वास, अशांति का वातावरण बन गया था। इसका फायदा बाहर से आए शिकारी को मिला। वह धीरे धीरे सब को अपना गुलाम बनाने लगा, जंगल का राजा बनने के लिए उसने अपनी पूरी ताकत लगा दी। उसने फूट डालो और राज करो की नीति अपनाई , तथा अपना शासन स्थापित कर लिया। अब वहाँ के सभी जानवरों को अपनी गल्ती का एहसास हो गया था पर बहुत देरी हो गयी थी। उनकी ताकत उनकी एकता थी और आपसी विश्वास था, पर वह कही खो गया था।

शिकारी का अत्याचार बढ़ता गया। वह एक एक कर सभी जानवरो को मारने लगा, जब अस्तित्व का संकट आता है तब सभी एक जुट हो ही जाते है। सभी ने अपने पुराने रिश्तो और पुराने दिनो को याद किया तथा मिलकर संकट का सामना करेंगे यह तय किया। उनकी इस सकारात्मक बदलाव को देखकर शिकारी डरकर भाग गया, और सभी फिर से अपने खुशियो के पुराने दिनो कि ओर वापस लौट आए। जंगल में फिर से मंगल ही मंगल था, सभी अपनापन और भाईचारे के साथ शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करने लगे। शायद उन्हें गल्ती का एहसास हो गया था कि मनोरन्जन को सिर्फ मनोरंजन के रूप में लेना चाहिए न कि उसे जीवन मे उतारने के लिए। क्योंकि मनोरंजन जीवन नही है, पर जीवन में मनोरंजन के पल आते जाते रहते हैं। शायद अब उन्होंने जीना सीख लिया था।

महान लीडर अपने कार्मिकों के आत्मसम्मान बढ़ाने के लिए एक कदम आगे जाकर प्रयास करता है

- सैम वाल्टन

"अंकुर"

ए.पदमावती, प्रबं.(प्रशा.), एच.एस.सी.एल.

साथ का लगा हुआ घर खाली था। कोई व्यक्ति को आंबटित हो तो आयेगें। दो–चार दिन के बाद एक परिवार (पंजाबी) रहने आये, परिवार में पति–पत्नि एक बेटा था।

बगल वाल घर वालों से परिचय हुआ, साफ–साफाई कर वह वहाँ रहने लगे। पड़ोसी परिवार में पति–पत्नि दो बेटे और दो बेटी रहते थे। कुछ ही दिनों में दोनों परिवार में अच्छी मित्रता हो गयी, दूसरे परिवार वाले दक्षिण भारतीय थे, उनकी भाषा पंजाबी से बिल्कुल अलग।

पंजाबी आंटी अपने परिवार का दिन–भर पूरी देख–रेख करती, पति को मध्यान्ह में गरम रोटी अपने हाथों से बनाकर खिलाती पर दक्षिण भाषी परिवार की पत्नी नौकरी करती थी। वह सुबह–सुबह अपने सभी कार्य सीमित समय में पूरे कर कार्यालय समय पर वह अपने कार्य पर चली जाती।

पंजाबी आंटी निरक्षर थी, उन्हें पढ़ना लिखना नहीं आता था, परन्तु घर के कार्य सिलाई–बुनाई में दक्ष थी। पड़ोसी परिवार की बेटी आंटी के पास छोटे बाबू के बहाने उनके पास जाती रहती। एक दिन गांव से तार आया। डाकिया ने हस्ताक्षर करने को कहा आंटी ने कहा मुझे तो नहीं आता ला अंगूठा लगा देती हूं। उस समय बेटी सोचने लगी, इन्हें मैं अक्षर सिखाऊंगी। ताकि वह अपना नाम लिख सके।

आंटी का बेटा नर्सरी जाने लगा उसी समय उसे पढ़ाने के साथ आंटी से भी अपने नाम के अक्षर सीखने के लिए प्रेरित करने लगी। हो न हो धीरे–धीरे उसके प्रयास से वह अपना नाम लिखना सीख ली।

इसी बीच आंटी के घर बेटी का जन्म हुआ, एक–एक कर आंटी के घर दो बेटी और जन्म ली। पड़ोस की जो नौकरी करती थी ने कहा कि आपको नसबंदी करा लेना चाहिये। आंटी ने कहा देखिये आपके भी तो चार बच्चे हो गये हैं। तब आंटी को समझाना पड़ा पहले एक लड़का, लड़की तीसरे में जुड़वा हैं बहन। मैं तो आपको अपनी सेहत के लिए यह सलाह दे रहीं थी। मैं तो गांव में पली–पढ़ी हुई हूं, वहां तो परिवार में आठ या नौ बच्चे होते हैं।

दक्षिण भाषी परिवार के बच्चे अपने–अपने पढ़ाई में दक्ष, घर के कार्यों में दक्ष, यह देख आंटी अपने मन में सोचती क्यों न मैं भी अपने बच्चों को इन्हीं की तरह पालूं। आंटी ने कहा आज से मेरे बच्चों को तुम पढ़ाओगी, उनकी बड़ी बेटी आंटी के बच्चों को पढ़ाती साथ में खेलती।

दक्षिण भाषी परिवार में नवम एशियन खेल भारत में होने क कारण उसे प्रत्यक्ष देखने के उत्साह में टी.वी. खरीदा गया। आंटी अपने बच्चों के साथ बगल घर आती टी.वी. में चलचित्र, गाने आदि देखती। साथ ही बीच में जो विज्ञापन आते उन्हें भी देखती थी। इसी बीच आंटी ने एक और पुत्र को जन्म दिया। डॉक्टर की सलाह थी, कि वह अब परिवार को सीमित रखने आपरेशन करा लें, तभी आंटी ने कहा "मैं भी यही सोच रही हूं," मैंने टी.वी. में देखा बड़ा परिवार दुखों का घर। खुशी से आंटी ने नसबंदी करवा ली। टी.वी. में लड़कियों के पढ़ाई संबंधी विज्ञापन आदि भी देखती तो कहती यह तो ऐसे ही बोलें हैं।

इसी बीच पड़ोस की बड़ी बेटी स्कूल की शिक्षा पूरी कर कॉलेज में दाखिला लिया, तीन साल की पढ़ाई के बीच आंटी के साथ छुटिटयों में साथ बैठकर उनसे सिलाई–बुनाई गेहूं बुहारना, सूपा चलाना बैग बनाना सीखा। आंटी अपने सास–ससुर की सेवा के बारे में बताती। गांव में पर्दा–प्रथा थी,जब उनके जेठ आते तो परदा रखती, सास आती तो सास की खूब सेवा करती। बड़ों का मान रखना, आंटी से ही सीखा, पड़ोस की बेटी ने।

आंटी कहती पढ़ाई हो गयी शादी कर दो आप अपनी बेटी की। दक्षिण भाषी महिला कहती करते हैं। इसी बीच बेटी की नौकरी लग गई। आंटी खुश। आज तुम्हारे पढ़ने का फल मिल गया। आंटी बेटी–बेटा में भेद करती बेटा वंश चलाता है। "बेटी तो दूसरे घर जाये हैं," पर आंटी बेटी ही तो पूरा परिवार चलाएं हैं। कहती पड़ोस की बड़ी बेटी।

आज आंटी भिलाई छोड़ अपने ग्राम पंजाब गुरदासपुर में रहती हैं। उनकी तीनों बेटी छोटे–छोटे गांव के स्कूल में हिंदी पढ़ाती है, अपने पैरों पर खड़ी है, अपने बेटे बेटियों के साथ खुश।

कौन कहता है नारी सशक्तिकरण के लिये जुलुस –नोर की जरूरत है,

बस एक पहल और कोशिश की जरूरत है।

जो मैंने आंटी के भावों में अंकुरित हुये देखा।

यही सदी नारी सशक्तिकरण के रूप में है।

सबसे बड़ा मूर्ख

जे.आर.साहू, एम.टी.एस., क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, दुर्ग

एक बहुत धनी व्यापारी था, नाम था उसका धनपति उसके पास इतना धन था, उसे खुद नहीं मालूम लेकिन कंजूस था, वह भी पहले दर्जे का वह इस तरह रहता मानो इस दुनिया में उससे गरीब कोई नहीं है। न तो वह दान–पुन्य करता नहीं किसी प्रकार का समाज सेवा। उस का एक नौकर था, नाम था गरीब सिंह धनपति व्यापारी उसे उतना ही धन देता था, जिससे की उसका गुजर बसर हो सके। लेकिन वह नौकर परोपकारी था, अपनी कमाई का कुछ धन गरीबों को बांट देता था। ऐसा करता देख व्यापारी दंग रह जाता था। उसने पुछा गरीब सिंह इतनी कम मजदूरी से कैसे गुजर बसर कर लेते हो। और कुछ रूपये गरीबों की सेवाभाव में लगा देते हो। लेकिन यह तो गरीब सिंह की मन की बात है, व्यापारी के डांटने पर भी उसकी बात उसे समझ में नहीं आता था। व्यापारी उसे हमेशा डांट फटकार बोलता था, कि अरें गरीब सिंह कुछ धन बचाकर भी रखना सीख। आगें भविष्य में काम आयेगा। लेकिन नौकर गरीब सिंह उसके बातों को सुनकर मुस्करा देता था। और अपनी काम में लग जाता था।

एक दिन वह व्यापारी एक डण्डा लाकर अपने नौकर गरीब सिंह को देते हुये कहता हैं, कि यह डण्डा अपने पास रख एवं अगर तुमसे बड़ा मूर्ख, अगर तुम्हें मिले तो यह डण्डा उसे दे देना। नौकर गरीब सिंह डण्डा अपने पास रख लिया। व्यापारी धनपति अपने नौकर से रोज उत्सुकता वश उसे पूछता था, कि गरीब सिंह वह डण्डा किसी को दिया कि नहीं, नौकर कहता है, तलाश कर रहा हूं, अभी नहीं मिला, व्यापारी जानता था, कि गरीब सिंह से मूर्ख इस दुनिया में है ही नहीं, मिलेगा कैसे। इस तरह उन लोगों का दिन बितता चला गया। कुछ दिन बाद व्यापारी धनपति बीमार हो गया, बहुत इलाज करवाया, लेकिन वह ठीक नहीं हुआ, उसे पता चल गया की अब उनका बचना मुश्किल है। अब मेरा ऊपर जाने का समय आ गया है। एक दिन अपने नौकर गरीब सिंह को बुलाकर कहता है, कि अब मेरा बचना मुश्किल है, बेचारा नौकर उनकी बातें सुनकर बहुत उदास हो गया, और सोचने लगा की सेठ के बगैर हम कैसे रहेंगे। हमारा जन्म ही सेठजी की सेवा–भाव एवं उनके देख–भाल के लिये हुआ है। बेचारा नौकर अपने दोनों हाथ जोड़ते हुये सेठजी को कहता है, कि सेठजी हमें भी अपने साथ ले जाना। सेठजी उसे डांटते हुये कहते है कि अरे मूर्ख वहां तो अकेले ही जाना होता है, किसी को साथ नहीं ले जाना होता है। बेचारा नौकर बहुत गिड़गिड़ाता है, कि उसे भी अपने साथ लें जायें। बीमार व्यापारी फिर चिल्लाकर कहता है, अरे गंवार मुझे मालूम तो था, कि तुमसे बड़ा मुर्ख इस दुनिया में नहीं है। बेचारा नौकर कुछ देर बाद व्यापारी की बात सुनता है, और दौड़ते हुये अपने घर की ओर जाता है, और वह डण्डा लेकर सेठजी को दे देता है, और कहता है, कि सेठ जी जब ऊपर अकेले ही जाना है, तो धन दौलत गाड़ी मोटर किस लिये है, आप जिन्दगी भर कमाते रहे, पाई–पाई जोड़ते रहे न दान–पुण्य न समाज सेवा किसके लिये धन कमाये हैं, जब ऊपर अकेले ही जाना है, तो ये धन का क्या करोगे?

नौकर के बात सुनकर मृत्यु के सैय्या पर लेटे व्यापारी को एहसास होता है। यह तो ज्ञानी एवं कल्याणकारी व्यक्ति है, सबसे बड़ा मूर्ख तो मैं हूं, कहते हुये अपने आपको कोसते हुये अंतिम सांस लेता है, एवं इस दुनियां को छोड़कर चलें जाता है।

सद् गुण बच्चे से सीख लो किंतु
दुर्गुण फरिश्ते से भी मत लो
– आचार्य श्री राम शर्मा

"सामान सौ बरस का पल की खबर नही"

पवन कुमार
उप महाप्रबंधक, राइट्स लिमिटेड

मैं जिस कहानी को लिख रहा हूं उसका पात्र बंगाली है और पेशे से छोटा दुकानदार है। जो हर समय निस्वार्थ अपने साझा परिवार की भलाई के लिए प्रयासरत रहता है। वह स्वार्थी नहीं है और उसका ध्येय परिवार के मुखिया के नाते सबको जोड़कर रखना है, बिखरने नहीं देना है। उसके शब्दों में "आधी रोटी खाना मंजूर है लेकिन परिवार के टुकड़े नहीं"। बंगाली बाबू का बड़ा भाई भंगेड़ी है लिहाजा उनके पत्नी व बच्चों का निर्वाह भी उनकी जिम्मेदारी है। वह परिवार के सब लोगों को शिक्षा देता हैं कि बाजार में अपनी बात खराब नहीं होने देना क्योंकि आपकी बात खराब हो गई तो कोई आप पर विश्वास नहीं करेगा और अपना धंधा चलाने के लिए उधार माल भी नहीं मिलेगा।

बड़े भाई के बच्चे अच्छा कमाने लगते हैं फिर बंगाली के ऊपर परिवार को अलग–अलग करने का दबाव आता है। पहले तो वह अलग नहीं करता लेकिन ज्यादा दबाव आने से उसको अलग–अलग करना पड़ता है। इससे उसकी व उसके पत्नी व बच्चों की हालत खराब हो जाती है। क्योंकि धंधे का एक ही जरिया दुकान, छोटा भाई होने की जिद कर बैठता है लिहाजा वह उसके नाम करनी पड़ती है।

बंगाली अपनी खराब माली हालत के बावजूद खुश रहता है। वह नौकरी करके अपने सात बच्चों का लालन–पालन करता है। वह अपना वर्तमान पर ज्यादा फोकस (केन्द्रित) करता हैं, भविष्य पर नहीं। वह सामाजिक व मिलनसार है, सबसे प्रेम से बात करते है। उनका कोई कार्य नहीं रूकता उसके हर काम उदाहरण के लिए शादी व्याह, बीमारी, बच्चों की शिक्षा इत्यादि कम पैसों में अच्छे तरह से हो जाती है।

बंगाली कोई भी कार्य अपने पत्नी एवं धन को परदे में रखकर करता हैं। उनका मानना है कि "बन्द मुट्ठी लाख की खुल गई तो खाक की" दूसरा वह अपने परिवार के सदस्यों को सलाह देता हैं कि अपना पेट हमेशा बड़ा रखो, जिसमें सब बातें जमा हो जाय लेकिन बाहर जरूरत की नपीतुली ही निकले।

उनके परिवार में शादी तय तो हो जाती थी क्योंकि वह बेहद सामाजिक व सम्माननीय व्यक्ति थे लेकिन पैसे की काफी कमी रहती थी उसके लिए वह रिश्तेदारों से पहले से बात करके गिफ्ट की जगह नगद पैसा लेने की पेशकश करता और मदद के लिए भी बोलता जिससे सबके सहयोग से कार्य अच्छी तरह निपट जाता था।

कोई चिन्तित होकर उनसे पूंछता कि इतना बड़ा कार्य कैसे होगा वह सहजता से कहता "होगा वही जो राम रचि राखा" यानि बहुत सहजता से उनका कार्य सम्पन्न हो जाता। बंगाली लोभ नहीं करता था जितना कमाता सब खर्च कर देता था कुछ जोड़ते नहीं थे।

एक बार उनके बेटे ने अवसादग्रस्त होकर कास्टिक सोडा पीकर आत्महत्या की कोशिश की लेकिन समय पर ज्ञात होने पर जान बच गई। उसका इलाज बंगाल में सरकारी हास्पीटल (अस्पताल) में धैर्यता से कराया और उसका नौकरी लगने पर उसकी शादी भी कर दी। आज उसके दिमाग में खुदकुशी का ख्याल भी नहीं आता और तबियत भी सही रहती है। इस परिप्रेक्ष्य में वह अपने भाग्य को कभी नहीं कोसता था बल्कि स्थिति को उपस्थित स्त्रोतों से कैसे संभालना है, संभालता था।

उनका छोटा भाई जो कि दुकान अपने नाम करा लिया था अपने इकलौते बेटे के गायब होने से खासा चिंतित था उसको बदमाशों ने उठा लिया था व मोटी फिरौती मांग रहे थे। बंगाली ने अपनी सादगी का परिचय देते हुए उनके तयशुदा स्थान पर जाकर बात की और बच्चे को वापिस दिलवाया।

बंगाली जरूरतमंद लोगों की यथाशक्ति मदद भी करता था। धन संचय पर, पत्नी की भविष्य की चिंता पर सर्वक्षा वह यही कहता था "सामान सौ बरस का पल की खबर नही"।

बंगाली कितनी भी विषम परिस्थितियों में अपनी दिक्कतों को सामने वाले पर उजागर न करके परदे में रखने की कोशिश करता था, भले ही कुछ उससे फर्क पड़े या न पड़े।

इन सब परिस्थितियों से जूझते हुए उसने अपने प्राण सहजता से त्याग दिए और उनकी मृत्यु यात्रा में हजारों लोग चल रहे थे। क्योंकि उसने किसी को दुख नहीं पहुंचाया था।

आज भी हमें पात्र बंगाली की जीवन जीने की कला सीखाती है। यानी हमें सबको जोड़ने वाली निस्वार्थ सेवा भाव व शांति से अपना जीवन व्यतीत करने वाला होना चाहिए। जीवन में कुछ लोग ज्यादा धन, रूपये की गर्मी में आपसे दुर्व्यवहार करे तो सहन करना चाहिए क्योंकि बंगाली के शब्दों में "पैसे वालों की दुनिया अलग ही होती है"।

मोनू का हौसला

सुरेन्द्र कुमार वैद्य
वरिष्ठ प्रबंधक, पंजाब एंड सिंध बैंक, भिलाई

दादाजी मैं खेलने जाउं। मोनू ने अपने दादाजी से कहा, हां बेटा जा पर ध्यान रखना बाहर गंदगी ज्यादा है। सफाई का ध्यान रखना। अभी वे अपने पोते से बात कर ही रहे थे कि घर की डोरबेल बजी। सामने देखा तो पोस्टमेन तार लेकर खड़ा था, जैसे ही तार पढ़ा, दादाजी सन्न रह गए कि उनका इकलौता बेटा सीमा की रक्षा करते हुए शहीद हो गया। आंखे नम हुई, मोनू कुछ समझ नहीं पाया, पूछा दादाजी क्या हुआ। दादाजी कुछ सोच नहीं पाए कि मोनू को जवाब क्या दूं कहा बेटा अभी तुमसे कहा था ना बाहर गंदगी है अब उसे साफ करने का समय आ गया है, आवो तुम बाहर खेलो, कहकर दादाजी सोफे पर बैठ गए।

मोनू की मम्मी एवं दादीजी बाजार गई हुई थी। दादाजी को समझ नहीं आ रहा था कि उनके आने पर यह खबर उन्हें कैसे दूं। इसी सोच में थे कि मोनू ने फिर आवाज लगाई दादाजी क्या हुआ इतने उदास क्यों हो । बताइये ना –

बेटा यह बताओ यदि कोई तुम्हारी सबसे प्यारी वस्तु छीन ले तो तुम्हे कैसा लगेगा – दादाजी ने पूछा – दादाजी यदि वह वस्तु जिसने छीना है और वह उसके काम की है तो मैं तो और ज्यादा खुशी से उसे दे दूंगा – मोनू ने कहा।

दादाजी को शायद इस उत्तर की उम्मीद नहीं थी पर बेटा वह वस्तु तुम्हारी सबसे प्यारी है तो क्या तुम्हे दुख नहीं होगा। क्यों नहीं होगा दादाजी आखिर मैंने मन में भी जज्बात है पर दादाजी आपने ही तो सिखाया है कि हर मनुष्य को समय के अनुसार तैयार रहना चाहिए। दुख करने से मन विचलित होता है और मनुष्य की सोच कमजोर पड़ती है।

दादाजी क्या हुआ। आप शांत क्यो हैं, आप, रो क्यो रहे हैं रूको मैं अभी मम्मी और दादीजी को बुलाता हूं मोनू ने कहा ही था कि दरवाजे पर देखा, मम्मी और दादीजी खड़ी है।

क्या हुआ मोनू, दादाजी को परेशान किया क्या, नहीं मां एक पोस्टमेन आया उन्होंने दादाजी को एक कागज दिया और दादाजी के आंखों में आंसू आ गए।

एक फौजी के परिवार के सदस्यों को बताने के लिए इतना ही काफी था जो जहां था वही खड़ा रह गया। सभी एक दूसरे के तरफ देखते रहे और जब सब्र टूट गया तो सभी एक दूसरे को लिपट कर रोने लगे। मोनू इतना तो समझदार था कि वह यह तो समझ सकता था कि कुछ अनहोनी हुई है। मोनू यह सब देखकर अंदाजा तो लगा ही चुका था कि उसकी सबसे प्यारी वस्तु उससे छीन गई है।

– दादाजी चुप हो जाओ, मम्मी, दादी आप भी मत रोओ पापा मुझसे हमेशा बहादुरी की बाते करते थे, मैं पापा की कमी तो पूरा नहीं कर पाउंगा पर वादा करता हूं कि इस देश से गंदगी अवश्य मिटाउंगा और इस काम के लिए मुझे आप सब का हौसला चाहिए।

मेरे ख्याल से एक समय ऐसा था
जब नेतृत्व का अर्थ ताकत था
किंतु आज लोगों से मिलकर चलना है

– महात्मा गाँधी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भिलाई- दुर्ग (छत्तीसगढ़)
सदस्यों की सूची (सार्वजनिक क्षेत्र के 15 उपक्रम)

क्र.	संस्थान व प्रमुख का नाम व पता	दूरभाष पी एंड टी/फैक्स	बी एस पी
1	श्री एस.चन्द्रसेकरन मुख्य कार्यपालक अधिकारी, भिलाई इस्पात संयंत्र व अध्यक्ष, नराकास भिलाई-दुर्ग भिलाई (छत्तीसगढ़) 490 001	2222999 फैक्स -0788 2222890, 2223491 ceo_bsp@sail-bhilaisteel.com	52001
2	श्री ए. लाहिरी कार्यपालक निदेशक एच.एस.सी.एल., भिलाई (छत्तीसगढ़) 490 001	2223878, 2276625 फैक्स-0788-2223909 9425296625 hscl_bhilai@sify.com	52168
3	श्री कांति रंजन पाल चौधरी महाप्रबंधक, मेकॉन लिमिटेड, इस्पात भवन, भिलाई इस्पात संयंत्र भिलाई (छत्तीसगढ़) 490 001	2220013, 2222475 फैक्स-0788-2224452 9425294104 bhilai@meconlimited.co.in	53073 52482
4	श्री राजीव भट्टाचार्य, प्रबंध निदेशक, फेरो स्क्रैप निगम लिमिटेड इक्विपमेंट चौंक, सेन्ट्रल एवेन्यू, भिलाई (छत्तीसगढ़) 490 001	2222474, 2222475 फैक्स-0788-220423 fsnl_co@rediffmail.com	54036 54037
5	श्री राजीव वर्मा, महाप्रबंधक प्रभारी, सेट पाँचवा तल, इस्पात भवन, भिलाई इस्पात संयंत्र भिलाई (छत्तीसगढ़) 490 001	2223093 फैक्स-0788-2224023 9407984822 rajeev.verma@sailcet. co.in	54212 54256
6	श्री राजीव रंजन त्रिपाठी, शाखा प्रबंधक, शाखा विक्रय कार्यालय, केन्द्रीय विपणन संगठन, इक्विपमेंट चौंक, भिलाई (छत्तीसगढ़) 490 001	2224451 2224173 फैक्स-0788-2220389 bmbhifp@sail-steel.com	53173 54373
7	श्रीमती डा.उषा रानी कार्य.महाप्रबंधक, आर.डी.सी.आई.एस, इस्पात भवन, भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई (छत्तीसगढ़) 490 001	2223377, 2223476 फैक्स 0778-223476 9407984806 usharani@sail-rdcis.com	52213

क्र.	संस्थान व प्रमुख का नाम व पता	दूरभाष पी एंड टी/फैक्स	बी एस पी
8	श्री मयंक सिंह, मुख्य प्रबंधक (सब–स्टेशन) पावरग्रिड कार्पो. ऑफ इंडिया, 400/220 के.वी. रायपुर उप केन्द्र, पोस्ट आफिस–कुम्हारी, जिला–दुर्ग (छ.ग.)	07821–247349 एक्सटेंशन–304 2411194 फैक्स 0712–641366 9425294140	......
9	श्री एस.के.गराई, महाप्रबंधक 'सेल', भिलाई रिफ्रैक्टरीज यूनिट, उतई रोड, भिलाई भिलाई (छत्तीसगढ़)	2265550 2265555 9425235027 फैक्स 2275491 gmsrubhilai@gmail.com	58063
10	श्री कुश मनहर, महाप्रबंधक, भारत संचार निगम लिमिटेड, दूरसंचार भवन, दुर्ग (छत्तीसगढ़)	09479002277 2330800 फैक्स 2330800 @bsnl.co.in	......
11	श्री आलोक दास, उप महाप्रबंधक बी.एस.एन.एल., दूरसंचार कारखाना 43, हैवी इंडस्ट्रियल एरिया हथखोज, भिलाई –490 026 (छत्तीसगढ़) 490026	2286100 फैक्स 2286770 9425201543 9425201318 aloke@bsnl.co.in	......
12	श्री नारायण लाल मीणा, क्षेत्रीय प्रबंधक भारत पेट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड,जीई रोड, भिलाई पिन 3490021	2281127 फैक्स 0788–2281467 9977244449/9926427545 narayanlalmk@bharatpetrol.co.in	......
13	श्री बी.एम. राऊत, क्षेत्र प्रबंधक, भारतीय खाद्य निगम, जिला कार्यालय, नानेश काम्पलेक्स, धमधा रोड, कृषि उपज मंडी के सामने दुर्ग (छत्तीसगढ़)–491001	2216451, 2216097 फैक्स 0788–2210767 9826767600 durgch.fci@nic.in	......
14	श्री पी.के.उपाध्याय, महाप्रबंधक, एन.एस.पी.सी.एल., पुरैना गाँव के पास, भिलाई (पूर्व) भिलाई (छ.ग.) 490 021	2228652 फैक्स 2223410 फैक्स 2282447 9425553637, 9425293225.	.....

क्र.	संस्थान व प्रमुख का नाम व पता	दूरभाष पी एंड टी/फैक्स	बी एस पी
15	श्री डी.के.बिष्ट महाप्रबंधक (निरीक्षण) राइट्स लिमिटेड 50, विस्तार कार्यालय, भिलाई इस्पात संयंत्र भिलाई (छत्तीसगढ़) 490 001	2227776, 2226457 फैक्स 2227305 9630022556 crinspn@rites.com	53011 54992
16	श्री एम.एल.भारिया वरिष्ठ डिपो प्रबंधक इंडियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड रेलवे गुड्स रोड के पास, भिलाई– 3 जिला– दुर्ग (छत्तीसगढ़)	2235535 2281346 फैक्स 2220099 9428271122 mlbhariya@indianoil.in	....

ख. सदस्यों की सूची (केंद्र शासन के 9 प्रतिष्ठान)

17	श्रीमती शिखा गुप्ता, उप महानिरीक्षक, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, सेक्टर –3, भिलाईनगर (छत्तीसगढ़)	2221336 फैक्स 2227838 bsp-bhilai@cisf.gov.in	58967
18	श्री जी.सी.चट्टोपाध्याय, उप निदेशक कार्यालय प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखा परीक्षा एवं पदेन सदस्य, लेखा परीक्षा बोर्ड, रांची, इकाई – निवासी लेखा परीक्षा कार्यालय, इस्पात भवन, द्वितीय तल, भि.इ.सं., भिलाई (छत्तीसगढ़)	2227824 फैक्स 2221028 9993234673 raobspaudit@gmail.com	52195 52924
19	श्री एस.के.दुबे, आई.पी.एस. प्रवर अधीक्षक, दुर्ग संभाग भारतीय डाक विभाग, सिविक सेंटर, भिलाई नगर (छत्तीसगढ़) 490 006	2261675, 2261004 फैक्स 2261675	8260
20	श्रीमती प्रतिभा सिंह बंसल उपायुक्त, केन्द्रीय सीमा उत्पादशुल्क एवं सेवाकर विभाग, प्रभाग–1 (रायपुर नाका के पास) हुडको भिलाई नगर (छत्तीसगढ़) 490 009	2242855 फैक्स 2242855 cexdiv.bhilai1@gmail.com	....

क्र.	संस्थान व प्रमुख का नाम व पता	दूरभाष पी एंड टी/फैक्स	बी एस पी
21	श्री प्रवीर बेनर्जी, आई.पी.एस. सहायक आयुक्त, केन्द्रीय सीमा तथा उत्पाद शुल्क भवन, प्रभाग 2 (रायपुर नाका के पास) हुडको, भिलाई नगर (छत्तीसगढ़) 490 009	2242805 फैक्स 2242805	....
22	श्री मान सिंह सहायक निदेशक (गुणवत्ता आश्वासन) गुणवत्ता आश्वासन विभाग, सड़क 10, सेक्टर–1 भिलाई (छत्तीसगढ़) 490 001	2277602 फैक्स 2223374	52931
23	श्रीमती शीतल शाश्वत वर्मा संयुक्त आयुक्त, आयकर विभाग, आयकर भवन, सिविक सेंटर, भिलाई नगर (छत्तीसगढ़) 490 006	2261500, 5091047, 2242881 फैक्स 2220443	58387
24	श्री प्रदीप कुमार विश्वकर्मा, तकनीकी सहायक (ध्वनि) क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, प्रोफेसर कॉलोनी, दीपक नगर, दुर्ग (छ.ग.)	2322923 मो. 9424161920 9752845575 fpoct.durg.dfp@gnic.com	....

ग. सदस्यों की सूची (बैंक 21 व 5 बीमा संस्थान : कुल 26)

25	श्री ए.के.बेहरा सहायक महाप्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक, सेक्टर–1 भिलाई नगर (छत्तीसगढ़) 490 001	2279463 मो 9425293456 फैक्स 2223077 sbi00330@sbi.co.in	....
26	श्री सरोज रंजन नायक, सहायक महाप्रबंधक, यूको बैंक, सेक्टर– 1, भिलाई भिलाई नगर (छत्तीसगढ़) 490 001	2229334 2221952 फैक्स 2229334 bhilai@ucobank.co.in	....
27	श्री एस.के.वैद्य, वरिष्ठ प्रबंधक, पंजाब एण्ड सिंध बैंक, सेक्टर–6, भिलाई नगर (छत्तीसगढ़) 490 006	2284467 फैक्स 2222020 bo434@psb.co.in	....

क्र.	संस्थान व प्रमुख का नाम व पता	दूरभाष पी एंड टी/फैक्स	बी एस पी
28	श्री तपनशील, मुख्य प्रबंधक, कैनरा बैंक, सेक्टर–6, भिलाई नगर भिलाई नगर (छत्तीसगढ़) 490 006	2283358 फैक्स 2216059 tapankrsil@canarabank.com cb0298@canarabank.com	....
29	श्री राजकुमार, वरि. प्रबंधक, इंडियन बैंक, सेक्टर–6, बी–मार्केट, भिलाई नगर (छत्तीसगढ़) 490 006	2283921 फैक्स 2229107 bhilai@indianbank.co.in	....
30	श्री एन. मोहन कुमार मुख्य प्रबंधक, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, सिविक सेंटर, भिलाईनगर (छत्तीसगढ़) 490 006	2261612 2261598 फैक्स 2261598	....
31	श्री अरविंद कुमार मुख्य प्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा, सिविक सेंटर, भिलाईनगर (छत्तीसगढ़) 490 006	9752410743 2224445, 2261557 फैक्स 0788–2261557 bhilai@bankofbaroda.com	....
32	श्रीमती अनिता हथबलने, मुख्य शाखा प्रबंधक, पंजाब नेशनल बैंक, सिविक सेंटर, भिलाईनगर (छत्तीसगढ़) 490 006	2224381 2220797 फैक्स 2261551	....
33	श्री टी.रामप्रसाद मुख्य प्रबंधक, आन्ध्रा बैंक, सिविक सेन्टर, भिलाईनगर (छत्तीसगढ़) 490 006	2261508 2261566 (नि.) bmbnr0740@andhrabank.co.in	58354
34	श्री पी. के. नायक मुख्य प्रबंधक, बैंक ऑफ इंडिया, सिविक सेन्टर, भिलाईनगर (छत्तीसगढ़) 490 006	2261556 फैक्स 2261568 bhilai-raipur@bankofindia.co.in	....
35	श्री गगन मोहन प्रसाद मुख्य प्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक, गंजपारा शाखा, दुर्ग (छत्तीसगढ़)	4042120, 2323178 फैक्स 2211871	....

क्र.	संस्थान व प्रमुख का नाम व पता	दूरभाष पी एंड टी/फैक्स	बी एस पी
36	श्री शिरीष ए.वाकनकर, वरिष्ठ शाखा प्रबंधक, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, कचहरी शाखा, दुर्ग (छत्तीसगढ़)	2322991 फैक्स 23322098	....
37	श्री ए.डी.पाटिल क्षेत्रीय प्रबंधक, देना बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, सुराना काम्प्लेक्स, स्टेशन रोड, दुर्ग (छत्तीसगढ़)	फैक्स 2333585 7389943118 dpatil@denabank.co.in zo.durg@ denabank.co.in	....
38	श्री गोविंद श्रावगी मुख्य प्रबंधक, देना बैंक, सुराना काम्प्लेक्स स्टेशन रोड, दुर्ग (छत्तीसगढ़)	2333585 फैक्स 2333585 7389943123 durg@denabank.co.in	....
39	श्री राजेश कुमार सिंह, मुख्य प्रबंधक, केनरा बैंक, मोहन नगर, दुर्ग (छत्तीसगढ़)	2323163 9425502898 cb0289@canarabank.com	....
40	श्री जे.के.झा, मुख्य प्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा, स्टेशन रोड, दुर्ग (छत्तीसगढ़)	2322906/2210847 फैक्स 4013847 9752410745 Jayjha7@gmail.com	....
41	श्री अमोल चतुर्वेदी, वरिष्ठ प्रबंधक, इलाहाबाद बैंक स्टेशन रोड, भार्गव भवन पुराना बस स्टैंड, दुर्ग (छत्तीसगढ़)	2322843, 9329125827 br.durg@allahabadBank.in	....
42	श्री तारक नाथ दास, मुख्य प्रबंधक, बैंक ऑफ इण्डिया, इंदिरा मार्केट, प्रथम तल, दुर्ग (छत्तीसगढ़)	2327877 4017877 फैक्स 4017877 durg.raipur@bankofindia.co.in	....

क्र.	संस्थान व प्रमुख का नाम व पता	दूरभाष पी एंड टी/फैक्स	बी एस पी
43	श्री पैरी हरीश मुख्य प्रबंधक पंजाब नेशनल बैंक, स्टेशन रोड, दुर्ग (छत्तीसगढ़)	23230397 2332562 फैक्स 4060069 bo1654@pnb.co.in	....
44	श्री रमेश बरबटे, मुख्य प्रबंधक, देना बैंक, पॉवर हाउस, भिलाई (छत्तीसगढ़)	2224931 2223579 फैक्स 2250053 7389943110 bhilai@denabank.co.in	....
45	श्री एम.आर.राव, वरि. शाखा प्रबंधक, कार्पोरेशन बैंक, ए–9–10, जी.ई.रोड, वीरसावरकर मार्केट, तीन दर्शन मंदिर के सामने, सुपेला भिलाई (छत्तीसगढ़)	2227663 2221799 फैक्स 2221799 cb642@corpbank.co.in	....
46	श्री विकास चंद्र जेना, प्रबंधक, ओरिएण्टल बैंक ऑफ कामर्स, गुरुद्वारा के पास, स्टेशन रोड, दुर्ग (छत्तीसगढ़)	2329508 फैक्स 2229508 09685044747 bm0796@obc.co.in	....
47	श्री चन्द्रकांत तिवारी, मुख्य प्रबंधक, भारतीय जीवन बीमा निगम सिविक सेंटर, भिलाई (छत्तीसगढ़) 490 006	2261486 फैक्स 2250194 9425175896 bo_381@licindia.com	8155
48	श्री मुकेश सवई मंडल प्रबंधक, दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कं.लि. चौहान स्टेट, प्रथम तल, जी.ई.रोड, सुपेला भिलाई (छत्तीसगढ़)	4035682 4038683 फैक्स 4035332 mukesh.sawai@newindia.co.in	....
49	श्री अजीत कुमार मंडल प्रबंधक, यूनाइटेड इंडिया इन्श्योरेंस कम्पनी, तारा काम्प्लेक्स हाउस, भिलाई (छत्तीसगढ़)	2296872 2296873 फैक्स 2296873 9827161182	....

क्र.	संस्थान व प्रमुख का नाम व पता	दूरभाष	
		पी एंड टी/फैक्स	बी एस पी
50	श्री सुदर्शन दास, वरिष्ठ मंडल प्रबंधक नेशनल इन्श्योरेंस कम्पनी, आकाशगंगा काम्प्लेक्स, सुपेला, भिलाई (छत्तीसगढ़)	2295718 2295667 मो. 9826988666 फैक्स 2223591	....
51	श्री वाय.के.बिठलानी, मुख्य मंडल प्रबंधक, दि ओरियेन्टल इन्श्योरेंस कम्पनी, परमानंद बिल्डिंग, डा. राजेन्द्र पार्क चौक, पो.बा.नं. 51, जी.ई.रोड, दुर्ग (छत्तीसगढ़)	2323251, 2323252 फैक्स 2322737 मो. 9993200335 9425565654 ykvithalani@orientalinsurance.co.in	....

नोट – कृपया बी.एस.पी. दूरभाष के लिए पी.एंडटी. दूरभाष पर, पूर्व में 0788–285 का उपयोग करें।

सचिवालय संपर्क सूत्र :–

डॉ. बी.एम.तिवारी

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) एवं
सचिव, नराकास, भिलाई–दुर्ग
राजभाषा विभाग, कक्ष क्रमांक 317
तीसरा तल, इस्पात भवन,
भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई

दूरभाष : 54934 (कार्या.)
: 2227877 (पी.एंड टी)
ई–मेल : bmtiwari@sail-bhilaisteel.com

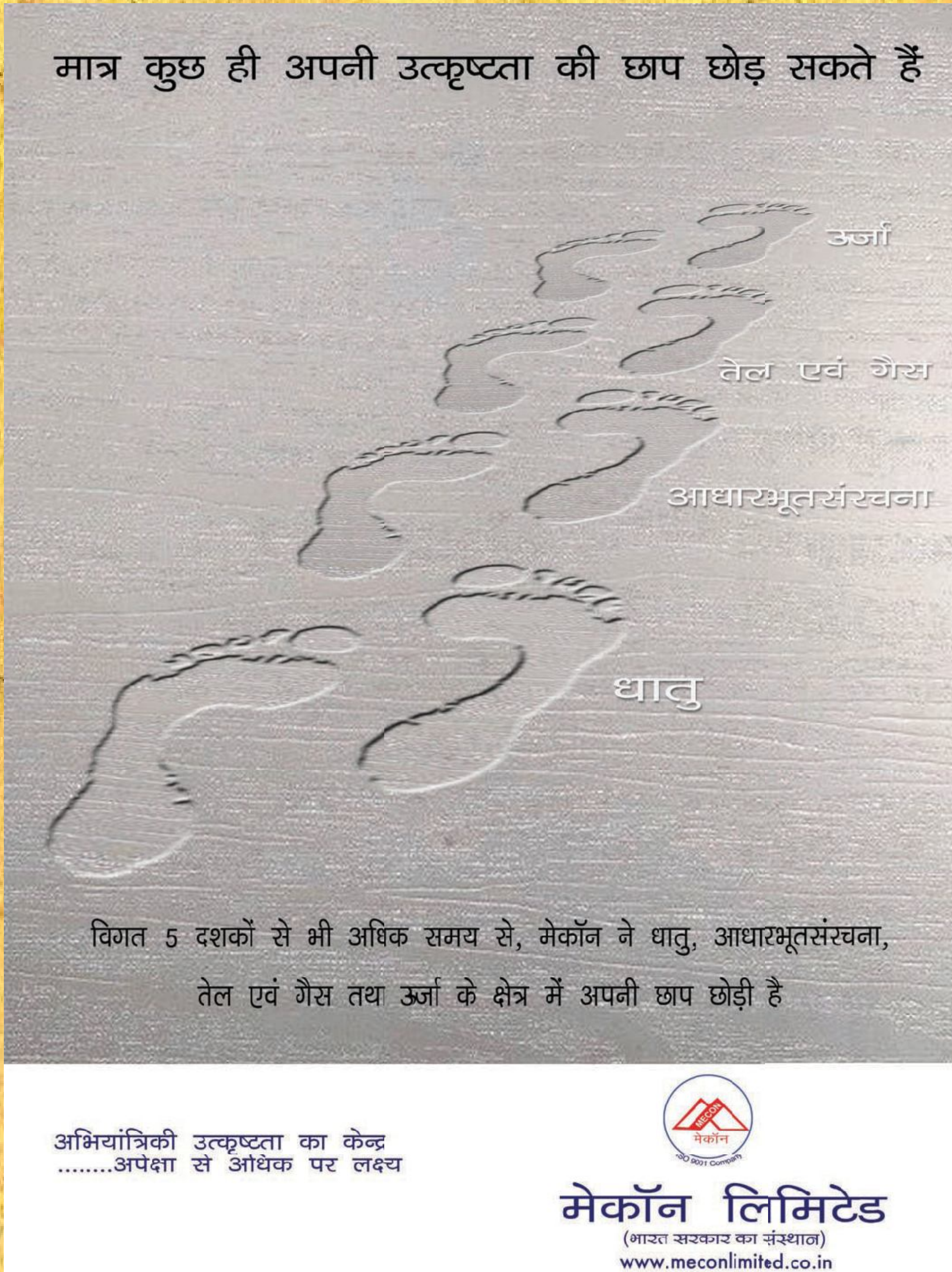
मात्र कुछ ही अपनी उत्कृष्टता की छाप छोड़ सकते हैं
ऊर्जा
तेल एवं गैस
आधारभूतसंरचना
धातु
विगत 5 दशकों से भी अधिक समय से, मेकॉन ने धातु, आधारभूतसंरचना,
तेल एवं गैस तथा ऊर्जा के क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ी है
अभियांत्रिकी उत्कृष्टता का केन्द्र
........अपेक्षा से अधिक पर लक्ष्य
MECON
मेकॉन
ISO 9001 Company
मेकॉन लिमिटेड
(भारत सरकार का संस्थान)
www.meconlimited.co.in

हम सर्व व्याप्त हैं : सेल-राउरकेला,भिलाई,बोकारो,दुर्गापुर,भद्रावती,सलेम आईएसपी-बर्नपुर,आर.आई.एन.एल.-विजाग,एन.आई.एन.एल-डुबरी ,आरडब्लूएफ-बैंगलुरु एवं भेल-हरिद्वार

फेरो स्क्रैप निगम लिमिटेड

(भारत सरकार का एक उपक्रम), मिनी रत्न-II कंपनी

FERRO SCRAP NIGAM LIMITED

(A Govt. of India Undertaking) , A Mini Ratna-II Company

व्यर्थ का उपयोग - हमारा आदर्श

तकनीक - हमारा औजार

हम "व्यर्थ को अर्थ " में सम्परिवर्तित कर इस्पात सयंत्रो को विशिष्ट सेवाएँ देने हेतु कृत संकल्पित है |

FSNL Bhawan,
Equipment Chowk,
Central Avenue,
Post Box No.37.
BHILAI - 490 001,
CHHATISGARH.

Tel. No. : 2222474 / 2222475 (P & T)
4036 / 4037 (BSP)
Fax No. : 0788 - 2220423
0788 - 2223884
E-mail : fsnl_co@rediffmail.com
Website : www.fsnl.nic.in
CIN : U27102CT1989GOI005468

We are everywhere: SAIL-Rourkela,Bhilai,Bokaro,Durgapur,Bhadravati,Salem ISP-Burnpur,RINL-Vizag,NINL-Duburi,RWF-Bengaluru & BHEL-Haridwar

हम सर्व व्याप्त हैं : सेल-राउरकेला,भिलाई,बोकारो,दुर्गापुर,भद्रावती,सलेम आईएसपी-बर्नपुर,आर.आई.एन.एल.-विजाग,एन.आई.एन.एल-डुबरी ,आरडब्लूएफ-बैंगलुरु एवं भेल-हरिद्वार

We are everywhere: SAIL-Rourkela,Bhilai,Bokaro,Durgapur,Bhadravati,Salem, ISP-Burnpur,RINL-Vizag,NINL-Duburi,RWF-Bengaluru, BHEL-Haridwar

भारत का अग्रणी निर्माण संस्थान

हिन्दुस्तान स्टीलवर्क्स कन्स्ट्रक्शन लिमिटेड (भारत सरकार का उपक्रम), निर्माण भवन, भिलाई-490001, जिला-दुर्ग (छ.ग.)

वेब साईट web site: www.hscl.co.in ई-मेल E-mail : hsclbhilai.unisectt@hscl.co.in दूरभाष Phone: 07882223878 सिनCIN U27310WB 1964 GOI 026118

पंजीकृत प्रधान कार्यालय-पी 34/ए, गरियाहाट रोड (दक्षिण), कोलकाता-700031 (पश्चिम बंगाल) फोन-9103324737546

हमारी विशेषज्ञता-

इस्पात संयंत्रों का निर्माण एवं रखरखाव, औद्योगिक संयंत्रों, भव्य इमारतों, अस्पतालों एवं विश्वविद्यालयों का निर्माण, पूर्वोत्तर इलाकों में बैरकों का निर्माण, राजमार्गों एवं पुलों का निर्माण, देश की हर तरह की अधोसंरचनाओं का निर्माण, प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजनांतर्गत सड़कों का निर्माण इत्यादि.

एच.एस.सी.एल., भिलाई द्वारा भिलाई इस्पात संयंत्र की यूनिवर्सल रेल मिल एवं रेल वेल्डिंग लाइन निर्माण के दृश्य

देश का होगा ऊंचा नाम, हिंदी में यदि होगा काम.

युनाइटेड इंडिया इंश्यरेंस कंपनी लिमिटेड

UNITED INDIA INSURANCE COMPANY LTD.

AT UNITED INDIA, IT'S ALWAYS U BEFORE I

बेहेतर स्वास्थ्य की प्रसन्नता पाए

युनाइटेड इंडिया की मेडिकेयर पालिसी अपनाए

United India's फैमिली मेडिकेयर पालिसी २०१४

कर कटौती 80 डी

कवरेज 2 से 10 लाख

फ्री स्वास्थ्य जाँच

यूनाइटेड इंडिया इन्श्यूरेन्स कंपनी लिमिटेड सतत् प्रयासरत है "लोगों के जीवन में मुस्कान लाने के लिए" और इस कंपनी का उद्देश्य है - "समाधान- जो लौटाए मुस्कान त्वरित"

मंडल कार्यालय : तारा काम्प्लेक्स पावर हाउस, जी.ई.रोड, भिलाई फोन : 0788-2296872, 73

बीएसएनएल
भारत को जोड़े तेजी से
बीएसएनएल लैंडलाईन
पर उपलब्ध है
अनलिमिटेड़ नाईट कॉलिंग
सभी सर्विस प्रोवाइडर्स के नेटवर्क पर
रात्रि 9 बजे से सुबह 7 बजे तक
*अधिक जानकारी वेबसाईट पर उपलब्ध है।
नियम एवं शर्तें लागू
chiranjn.com
भारत संचार निगम लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
अधिक जानकारी के लिए कृपया www.bsnl.co.in देखें
टॉल फ्री नं. पर संपर्क करें : 18003451500
स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

नराकास भिलाई दुर्ग को दूसरी बार मध्य क्षेत्रीय प्रथम पुरस्कार-2015

पुरस्कार ग्रहण करते हुए महाप्रबंधक बी.ई. श्री एस.पी.एस. जग्गी

सी.ई.ओ. को पुरस्कार सौंपते हुए बी.एस.पी. के उच्चाधिकारी वर्ग

मध्य क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में प्रदर्शनी के सामने माननीय मुख्य अतिथि, अध्यक्ष एवं नराकास के संस्थान प्रमुख